श्री मुखवाणी संगीत

श्री मुखवाणी संगीत

संकलनकर्ता
श्री हर्षद भाई
श्रीमती अमर ज्योति
श्री राज किशोर सेतिया

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
सरसावा, जिला-सहारानपुर, उ.प्र.

प्रकाशक :
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
श्री प्राणनाथ ज्ञान पीठ ट्रस्ट
सरसावा, जिला-सहारनपुर उ.प्र.
वेबसाइट : **www.spjin.org**
ई-मेल - shriprannathgyanpeeth@gmail.com

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीनः इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सत्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञान पीठ ट्रस्ट के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति या संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिज़ाइन एवं प्रकाशित लेख इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला-सहारनपुर ही होगा।

प्रकाशन वर्ष- २०१६
बुद्ध जी शाका ३४१
विक्रमी संवत्-२०७६
ईश्वी सन्- २०१६

तृतीय संस्करण - १००० प्रतियां

न्यौछावर : ७०

मुद्रक : ज्ञानपीठ प्रेस

नकुड़ रोड सरसावा, सहारनपुर

अनुभूमिका

सम्यक् गीत ही संगीत है। वस्तुतः सम्पूर्ण चैतन्य वर्ग किसी न किसी रूप में संगीत से जुड़ा होता है। देवता, मनुष्य और असुर तो क्या पशु–पक्षी और पेड़ पौधे तक को संगीत के प्रति गहरी अभिरूची लेते हुए देखा जाता है।

संगीत का मूल उद्देश्य है, बर्हिर्मुखी वृत्तियों को समेटकर प्रियतम परब्रह्म से जोड़ना। वस्तुतः भक्ति संगीत ही वास्तविक संगीत है। संगीत का प्रयोग विलासिता के लिए करना समाज को अन्धकार में ले जाना है।

प्राचीन काल में संगीत बहुत उन्नत दशा में था। उस समय सामवेद के गायन की बहुत उत्कृष्ट परम्परा थी तथा सौ और हजार तन्तुओं वाली वीणा होती थी। संगीत–शास्त्र के रूप में नारद संहिता मान्य ग्रन्थ था।

वर्तमान समय में संगीत के अनेक वाद्यों का अविष्कार अवश्य हुआ है, किन्तु संगीत का उपयोग विलासिता के लिये अधिक हो रहा है। संगीत के सच्चे साधक भी कम ही है। भक्ति संगीत में भी विकृति आ गयी है। फिल्मी गीतों के शब्दों में हेर फेर करके भजन बनाये जाते हैं, धुन भी वहीं रखी जाती है। परिणाम स्वरूप भजन सुनते समय स्वाभाविक ही उस फिल्म का दृश्य मनः पटल पर अंकित हो जाता है। दुर्भाग्यवश यदि उस दृश्य में अश्लीलता है तो निश्चित ही भक्ति संगीत का परिणाम विपरीत दिशा में हो जाता है।

श्यामा जी की रसना इस ब्रह्मवाणी के गायन और श्रवण में कितना आनन्द है, इसे तो भुक्तभोगी ही जानता है। समाज में वैचारिक एकता, प्रेम की वृद्धि और आत्म जागृत के लिये श्री मुख वाणी की गायन प्रक्रिया को समुन्नत बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। वाणी गायन की महत्ता क्या है, इसके सम्बन्ध में मूल बीतक के आठवें पहर में स्वयं श्री महामति जी कहते हैं –

बानी धाम धनीय की, ए चौदे तबक हैयात।
पहिचान भई न काहू को, रूह पिये हैयाती हो जात।।3।।
आज लों इन इण्ड़ में, कबहूं काहू सुनी न कान।
कई हुए इण्ड कई होवहीं, पर काहू न बोए पहिचान।।4।।
ए सुननें की ताकत, त्रिगुन को ना होए।
और नाम किनके लेऊं, इन उपरान्त सोए।।5।।
ए बानी इन धाम की, ले बैठावत निजधाम।
सबको सुख उपजे, होए पूरन मनोरथ काम।।11।।
इन बानी से होत है, नजर पड़े बीच बका।
ए रसना स्यामाजीए की, पिलावत रस रब्ब का।।12।।
जो अक्षर को सुध नहीं, सो त्रिगुन पास क्यों होए।
सो सब इन बानी में, सुपने नजर पहुंची सोए।।14।।
तिन नाबूद की नजर, बीच अखंड पहुंचे।
अछर ठौर सरूप की, इन बानी से देखे।।16।।
जहां जबराईल रह्या, चल सक्या न आगे।
इन बानी की बरकतें, जमुना सातों घाट पहुंचे।।17।।
इन जुबां के सुर सुनते, सब ठौर आवे नजर।
रूह आतम पहुंचत, ताए हो जात फजर।।19।।

इन बानी के सुनते, आप होत हैयात।
देखे बैठे माया मिने, ठौर बका हक जात।।20।।
इन बानी के सुनते, खुलत भिस्त के द्वार।
आप देखे औरों दिखावहीं, पहुंचे नूर द्वार पार।।21।।
इन बानी की बरकतें, कछु न रहवे सक।
रूहें राजी रहे रात दिन, जाए बैठे कदमों हक।।22।।
इन बानी की बरकतें, भया जागृत सुपन।
पहिचान काहू ना हुई, पहिले पास आई सैंयन।।23।।
इन बानी की बरकतें, नींद उड़ी नूर जलाल।
ए याद करे सुपन को, होए के दिल खुसाल।।25।।
याद करे बानीय को, तब उठे आठों भिस्त।
इन बानी की बरकतें, धाम अन्दर पाई किस्त।।26।।
इन बानी की बरकत, मावे न जिमी आसमान।
सुंन छोड़ बका पहुंचे, सो मोमिन सुनके कान।।27।।
हक हादी रूहें रहत हैं, सो इन बानी में।
नित बिहार करत हैं, सो इन बानी सें।।32।।
इन बानी की बरकतें, सब दफे होत बलाए।
सदा सैतान कांपत, मिने पैठ न सके ताए।।35।।

इन कथनों को पढ़कर अपनी अन्तरात्मा से ही हमें पूछना होगा कि हम क्या गायें, ब्रह्मवाणी या फिल्मी धुनों पर बने हुए भजन? आशा है, यह ग्रन्थ आपको अतिशय प्रिय होगा।

vkidk
jktu Lokeh
Jh izk.kukFk KkuihB] ljlkok

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
१.	आवो जी वाला	१
२.	हवे पेहेलां मोहजलनी	१
३.	भूंडा जीव जागजे रे	२
४.	जोगमायानो देह धरीने	३
५.	पेहेलो सिणगार कीधो मारे	४
६.	पेहेलो सिणगार कीधो मारे	४
७.	जीवन सखी वृन्दावन रंग	५
८.	ओरो आव वाला आपण	५
९.	रमत रास करत हांस	६
१०.	आवी केसरबाई कहे रे	७
११.	अणी हांरे झीलण रंग सोहामणां	७
१२.	मारा वालाजी रे वल्लभ	८
१३.	सरदनी रूत रे सोहामणी	९
१४.	वचन वालाजी ना वालेरा	९
१५.	पिउजी तमे सरदनी रूते रे सिधाव्या	१०
१६.	वाला मारा हेमाले थी हेमरूत हाली	११
१७.	वाला रूतडी आवी रे सीतलडी	१२
१८.	वाला मारा आवी रे रूतडी वसंत	१३
१९.	वाला मारा आवी रे रूतडी ग्रीखम	१४
२०.	पावसियो आव्यो रे वरखा रूत मांहें	१५
२१.	वाला मारा खटरूतना बारे मास	१६
२२.	कछु इन विध कियो रास	१७
२३.	याद करो तुम साथ जी	१७
२४.	साथ सकल तुम याद करो	१८
२५.	ओहि ओहि करती फिरों	१८

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
२६.	आपन में बैठे आधार	१६
२७.	मेरे अंध अभागी जीव	१६
२८.	मेरे जीव अभागी रे	२०
२६.	मेरे जीव सोहागी रे	२०
३०.	मेरे साथ सोहागी रे	२१
३१.	आंखां खोल तूं आप अपनी	२२
३२.	भट परो तिन नींद को	२२
३३.	बेहद के साथी सुनो	२३
३४.	गुन केते कहूँ मेरे पिउ जी	२४
३५.	सुनियो बानी सोहागनी	२४
३६.	पिया मोहे स्वांत न आवहीं	२५
३७.	तलफे तारूनी रे	२६
३८.	विरहा गत रे जाने सोई	२६
३६.	इस्क बड़ा रे सबन में	२७
४०.	सनमंध मूल को	२८
४१.	एह बात मैं तो कहूं	२८
४२.	सत असत पटंतरो	२६
४३.	पार वतन जो सोहागनी	३०
४४.	अब निरखो नीके कर	३०
४५.	कोई कहे दान बड़ा	३१
४६.	अब तो मेरे पिया की	३२
४७.	मेरे साथ सनमंधी चेतियो	३२
४८.	अब जाग देखो सुख जागनी	३३
४६.	अल्ला मुहबा मासूक	३४
५०.	पिया मैं विध विध तोको ढूंढिया	३४
५१.	अब ढूंढों रूहें अर्स की	३५

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
५२.	अब सो कहां है महंमद	३६
५३.	सुनियो दुनियां आखिरी	३६
५४.	तुमको देऊँ सुख जागनी	३७
५५.	प्रीतम मेरे प्रान के	३८
५६.	पेहेले आप पेहेचानो रे साधो	३८
५७.	बिंद में सिंध समाया रे साधो	३६
५८.	साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो	४०
५६.	साधो हम देख्या बड़ा तमासा	४१
६०.	सुनो रे सत के बनजारे	४२
६१.	हो मेरी वासना	४३
६२.	हो भाई मेरे वैष्णव कहिए वाको	४४
६३.	कहा भयो जो मुख थें कहयो	४५
६४.	वचन विचारो रे मीठड़ी	४६
६५.	धनी न जाए किनको धूत्यो	४७
६६.	पतित सिरोमन यों कहे	४८
६७.	सखी री आतम रोग बुरो लग्यो	४६
६८.	मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया	५०
६६.	तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा	५१
७०.	चल्यो जुग जाए री सुध बिना	५२
७१.	रे हो दुनियां बावरी	५३
७२.	रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे	५४
७३.	रस मगन भई सो क्या गावे	५५
७४.	खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो रे साधो	५६
७५.	कहो कहोजी ठौर नेहेचल	५७
७६.	मैं पूछों पांड़े तुम को	५८
७७.	संत जी सुनियो रे	५६

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
७८.	कलि में देख्या ग्यान अचंभा	६०
७६.	भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म दिखलाओ	६१
८०.	रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते	६२
८१.	वालो विरह रस भीनो रंग विरहमां	६३
८२.	हांरे वाला बंध पड़या बल हरया तारे	६४
८३.	करनी तुमारी मेरी मैं तोली	६५
८४.	मीठडा मीठा रे	६६
८५.	विनता विनवे रे पिउजी	६६
८६.	म्हारा वस कीधल वाला रे	६७
८७.	प्रीत प्रगट केम कीजिए	६७
८८.	खोज थके सब खेल खसम री	६८
८६.	खिन एक लेहु लटक भंजाए	६६
६०.	बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे	७०
६१.	सतगुरू मेरा स्याम जी	७१
६२.	हो साथ जी वेगे ने वेगे	७२
६३.	आए आगम बानी इत मिली	७३
६४.	कृपा निध सुंदरवर स्यामा	७४
६५.	राजाने मलोरे राणें राए तणों	७५
६६.	कुली बल देखो रे	७६
६७.	साहेब तेरी साहेबी भारी	७७
६८.	साहेब तेरी साहेबी भारी	७८
६६.	मांगत हो मेरे दुलहा	७६
१००.	जिन सुध सेवा की नहीं	८०
१०१.	ए माया आद अनादकी	८१
१०२.	लाडलियां लाहूत की	८२
१०३.	जंजीरां मुसाफ की	८३

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
१०४.	मेरे धनी धाम के दुलहा	८४
१०५.	निजनाम सोई जाहेर हुआ	८५
१०६.	वतन बिसारिया रे	८६
१०७.	सखी री जान बूझ क्यों खोइए	८७
१०८.	साथजी पेहेचानियो	८८
१०६.	मेरे मीठे बोले साथ जी	८६
११०.	सुन्दर साथ जी ए गुन देखो रे	६०
१११.	सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की	६१
११२.	धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो	६२
११३.	धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन	६३
११४.	ए जो कही जागन	६४
११५.	साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर	६५
११६.	आग परो तिन कायरों	६६
११७.	चलो चलो रे साथ	६७
११८.	साथ जी सोभा देखिए	६८
११६.	आगूं आसिक ऐसे कहे	६६
१२०.	अब हम धाम चलत हैं	१००
१२१.	अब हम चले धाम को	१०१
१२२.	सुनों साथजी सिरदारो	१०२
१२३.	दरदी जाने दिल की	१०३
१२४.	सोई सोहागिन धाम में	१०४
१२५.	तो भी घाव न लग्या रे कलेजे	१०५
१२६.	इन धनी के बान मोको न लगे	१०६
१२७.	धिक धिक पड़ो मेरी बुध को	१०७
१२८.	धिक धिक पड़ो मेरी बुध को	१०८
१२६.	धनी एते गुन तेरे देख के	१०६

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
१३०.	साथ जी सुनो सिरदारो	११०
१३१.	बुजरकी मारे रे साथ जी	१११
१३२.	कयामत आई रे साथ जी	११२
१३३.	ए सूच कैसे होवहीं	११३
१३४.	कारी कामरी रे	११४
१३५.	फरेबी लिए जाए	११५
१३६.	सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल	११६
१३७.	नूर को रूप सरूप अनूप है	११७
१३८.	मोमिन लिखे मोमिन को	११८
१३९.	वारी रे वारी मेरे प्यारे	११९
१४०.	साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार	१२०
१४१.	स्यामाजी स्याम के संग	१२१
१४२.	हम चडी सखी संग रे	१२२
१४३.	वृथा कां निगमो रे	१२३
१४४.	धोरीडा मा मूके तारी धूसरी	१२४
१४५.	अंदर नाहीं निरमल	१२५
१४६.	केहेती हों उमत को	१२६
१४७.	ऐसा खेल देखाइया	१२७
१४८.	ना कछू देखूं दरसन	१२८
१४९.	मैं बिन मैं मरे नही	१२९
१५०.	ज्यों जानो त्यों रखो	१३०
१५१.	हक की बातें अनेक हैं	१३१
१५२.	गैब बातें मेहेबूब की	१३२
१५३.	ए बात सुनो तुम मोमिनों	१३३
१५४.	साकी पिलावे सराब	१३४
१५५.	देख तूं निसबत अपनी	१३५

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
१५६.	बीच अर्स खिलवत में	१३६
१५७.	हक कहे मेरी साहेबी	१३७
१५८.	नूर-जमाल के दीदार को	१३८
१५९.	रे रूह करे ना कछू अपनी	१३९
१६०.	उमर तो सब चल गई	१४०
१६१.	ऐसी बातें हक की	१४१
१६२.	हादी मीठे सुकन हक के	१४२
१६३.	खिलवत हक रूहन की	१४३
१६४.	ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला	१४४
१६५.	मैं लाड़ किया रूहन सों	१४५
१६६.	रूह अल्ला सुभाने भेजिया	१४६
१६७.	आसिक मेरा नाम	१४७
१६८.	रूहअल्ला भेद तिलसम का	१४८
१६९.	एक समे हक हादी रूहें	१४९
१७०.	अब कहूं रे इस्क की बात	१५०
१७१.	ब्रह्मसृष्टि लीजियो	१५१
१७२.	अब आओ रे इस्क भानूं हाम	१५२
१७३.	तुमको इस्क उपजावने	१५३
१७४.	सातों घाट बीच में	१५४
१७५.	अब कहूं मैं ताल की	१५५
१७६.	क्यों कहूँ इन सुखकी	१५६
१७७.	क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा	१५७
१७८.	भोम तले की बैठाए के	१५८
१७९.	पहाड़ मानिक मोहोल कई	१५९
१८०.	सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के	१६०
१८१.	खावंद इनों में खेलहीं	१६१

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
१८२.	अस्वारी पसु पंखियन पर	१६२
१८३.	प्रेम देखाऊं तुमको साथजी	१६३
१८४.	क्यों न होए प्रेम इनको	१६४
१८५.	एक चित्रामन दिवालें बन	१६५
१८६.	भोम तले की क्यों कहूं	१६६
१८७.	हक बैठे रूहों मिलाए के	१६७
१८८.	इन बिध हक का इलम	१६८
१८६.	चौदे तबक की दुनी में	१६६
१६०.	बरनन करूं बड़ी रूह की	१७०
१६१.	ए चरन निमख न छोड़िए	१७१
१६२.	अर्स मिलावा ले चली	१७२
१६३.	इन विध साथजी जागिए	१७३
१६४.	अर्स तुमारा मेरा दिल है	१७४
१६५.	फेर फेर सरूप जो निरखिए	१७५
१६६.	सिनगार किया सब दुलहे	१७६
१६७.	बल बल सोभा सरूप की	१७७
१६८.	पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए	१७८
१६६.	पांचमा सागर पूरन	१७६
२००.	जो हक तोहे देवें हिंमत	१८०
२०१.	सुख केते कहूं स्यामाजीय के	१८१
२०२.	बात बड़ी है मेहेर की	१८१
२०३.	बरनन करो रे रूहजी	१८२
२०४.	आसिक इन चरन की	१८३
२०५.	ऐसा आवत दिल हुकमें	१८४
५०६.	सखी री तेज भर्यो आकास लों	१८५
२०७.	कई गुन हक कदम में	१८६

क्र.सं.	किरंतन	पृष्ठ संख्या
२०८.	फेर फेर चरन को निरखिए	१८६
२०६.	अति मीठे रसीले रंग भरे	१८७
२१०.	ए क्यों छोड़े चरन मोमिन	१८७
२११.	अर्स अंदर सुख देवहीं	१८८
२१२.	दिल हक का और हादी का	१८६
२१३.	रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत	१८६
२१४.	मुख मेरे मेहेबूब का	१६०
२१५.	देखों नैना नूरजमाल	१६१
२१६.	नूर भरे नैना निरमल	१६२
२१७.	भूखन सब्दातीत के	१६२
२१८.	सब अंग हक के इस्क भरे	१६३
२१६.	बरनन करो रे रूह जी	१६४
२२०.	क्यों बरनों हक सूरत	१६५
२२१.	अरवा आसिक जो अर्स की	१६६
२२२.	हक इलम के जो आरिफ	१६७
२२३.	जैसी सरूप की नाजुकी	१६७
२२४.	ऐसा खेल किया हुकमें	१६८
२२५.	हक को काम और कछू नहीं	१६६
२२६.	बैठे मासूक जाहेर	१६६
२२७.	जब हक बिना कछू ना देखें	२००
२२८.	रूहों मैं-रे तुमारा आसिक	२०१
२२६.	रे पिरीयम, हथ ताहिजडे हाल	२०२
२३०.	तिस वास्ते दुनी पैदा करी	२०३
२३१.	खावंद इनों में खेलहीं	२०४
२३२.	बड़ीरूह रूहें नूर में	२०५

१

राग श्री काफी

१. आवो जी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।।

२. मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।।

३. कलकली ने कहूं छूं तमने, आवजो आणे खिणे।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणे।।

किरंतन-प्रकरण-४५

२

१. हवे पेहेलां मोहजलनी कहूँ वात, ते ता दुखरूपी दिन रात।
दावानल बले कई भाँत, तेणी केटली कहूँ विख्यात।।

२. मायाना मुख मांहें थी, जुगते काढी जोर।
दई तजारक अतिघणी, माया कीधी पाधरी दोर।।

३. धणीना जेम धणवट, लीधी भली पेरे सार।
आ दुख रूपणीना मुख मांहें थी,बीजो कोण काढ़े बिना आधार।।

४. तमे कृपा कीधी अति घणी, जाणी मूल सगाई घर तणी।
माया पाडी पडताले हणी, बल दीधूं मूने मारे धणी।।

५. हवे ए धन में जोपे जाण्यूं, जिभ्याए न जाय वखाण्यूं।
मारा हैडामां आण्यूं, अम विना कोणे न माण्यूं।।

६. में चित मांहें चितव्यूं, जाण्यूं करसूं सेवा सार।
मल्यो धणी मूने धामनो, सुफल करूँ अवतार।।

७. मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार।
वारणे जाय इन्द्रावती, मारा आतमना आधार।।

रास-प्रकरण-१

३

राग मारू

भूंडा जीव जागजे रे

१. कांई धणी तणें चरण पसाय, तू भरम उडाडजे रे ।।टेक।।
धणी रे आपणमां आवियां, भूंडा कां नव जागे जीव।
पेरे पेरे तूने प्रीछव्यो, तूं हजी करे कां ढील।।

२. आपण ने तेडवा आविया, आ दुस्तर माया मांहें।
ओलखी ने कां ओसरे, भूंडा एम थयो तू कांए।।

३. भरम भूंडो तमे परहरो, जेम थाय अजवालुं अपार।
वचन वालाजी तणे, तू मूलगां सुख संभार।।

४. वालो वदेसी आवी मल्या, कांई आपणने आ वार।
दुख मांहें सुख माणिए, जो तू भरमनी निद्रा निवार।।

५. अनेक वचन तूने कह्या, मान एकनो करे विचार।
अर्ध लवे तारो अर्थ सरे, भूंडा एवडो तू कां केहेवराव।।

६. कहे इंद्रावती नरसैयां वचन, जो जोइए करीने चित।
धणिए जे धन आपियूं, कांई करी आपणने हित।।

रास-प्रकरण-३

४

राग धन्यासरी

१. जोगमायानो देह धरीने, श्री स्यामाजी थया तैयार।
ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार।।

२. सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाय।
हूं रे अबूझ कांई घणूं नव लहूं, एनो निरमाण केम करी थाय।।

३. एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कई ने सूरज ढंपाए।
केम करी सोभा वरणवुं रे सखियो, मारो सब्द न पहोंचे त्यांहें।।

४. भूखण स्वर सोहामणा, मुख वाणी ते बोले रसाल।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल।

५. साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास।
विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास।।

६. रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय।
इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाय।

रास-प्रकरण-७

५

१. पेहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहेनो ते वरणवुं लवलेस।
पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सारूं कहेस।।

२. सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह।
सबदातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह।।

३. चरण तणा अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार।
रंग तो जोई जोई मोहिए, पासे कोमल आंगलियों सार।।

४. पीडी ऊपर पायचा, ने झीणी कुरली झलवार।
केसरिए रंग सूथनी, इंद्रावतीजी निरखे करार।।

५. सज थया सिणगार करीने, रास रमवानूं मन मांहें।
साथ सकल मारा पिउ पासे आव्यो, इंद्रावती लागे पाए।।

६. दई प्रदखिणा अति घणी, साथे कीधा दंडवत परणाम।
हवे करसूं रामत रंग तणी, अने भाजसूं हैडानी हाम।।

रास-प्रकरण-८

६

१. पेहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहेनो ते वरणवुं लवलेस।
पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सारूं कहेस।।

२. सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह।
सबदातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह।।

३. चरण तले पदमनी रेखा, करे ते अति झलकार।
पानी लांक लाल रंग सोभे, इंद्रावती निरखे करार।।

४. टांकन घूंटी ने कांडा कोमल, कांबी कडला बाजे रसाल।
घूंघरडी घम घम स्वर पूरे, मांहें झांझर तणो झमकार।।

५. झांझरियां जडाव जुगतनां, करकरियां सोभंत।
घूंघरडी करडा जडतरमां, झलहल हेम करंत।।

६. मुख ऊपर मोती निरमल लटके, बेसर ऊपर लाल।
काने करण फूल जे सोभा धरे, ते ता झलके मांहें गाल।।

७. दई प्रदखिणा अति घणी, साथें कीधा दंडवत परणाम।
हवे करसूं रामत रंग तणी, अने भाजसूं हैडानी हाम।।

रास-प्रकरण-८

७

राग धन्या श्री

१. जीवन सखी वृंदावन रंग जोइएजी, जोइए अनेक रंग अपार।
विगते वन देखाडूं तमने, मारा सुंदरसाथ आधार।।

२. आंबा आंवलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड।
अनानस ने आंबलियो दीसे, चारोली चंपा छोड।।

३. परवती परवाली ने पाडर, पान वेल अति सार।
आल अकोल ने बेर उपलेटा, दुधेला ने देवदार।।

४. जमुनाजीना जल जोरावर, मध्य वहे छे नीर।
वेहेतां जल वले रे खजूरिया, दरपण रंग जाणो खीर।।

५. रेत सेत सोभा धरे, वृंदावन मंझार।
सकल कलानो चंद्रमा, तेज धरा धरे अपार।।

६. एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार।
घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार।।

रास-प्रकरण-१०

८

राग सिंघूडो

१. ओरो आव वाला आपण फूंदडी फरिए, फरिए ते फेर अपार।
फरतां फरतां जो फेर आवे, तो बांहोंडी म मूकसो आधार।

२. तमे तो वाला जी फूंदडी फरो छो, पण फरो छो आप अंग राखी।
ए रामत करतां मारा वालैया, फरिए पाछां अंग नाखी।।

३. जुओ रे सखियो तमे आ जोड फरतां, रामत करे घणे बल।
इंद्रावतीनां तमे अंगडा जो जो, मारा वालाजीसूं फरे केवे बल।।

४. जुओ रे सखियो एम गातां फरतां, वालाजीने देऊं चुमन।
भंग न करूं फेर फूंदडी केरो, तो देजो स्याबासी सहु जन।।

५. एम अंग वालीने रमजो रे सखियों, तो कहूं तमने स्याबास।
एम लटके रंग लेजो वचमां, तो हूं तमारडी दास।।

६. हूं तो साचूं कहूं रे सखियो, तमने तो कांईक मरजाद।
सांचू कहे अने प्रगट रमे, इंद्रावती न राखे लाज।।

रास-प्रकरण-१७

९

राग वेराडी चरचरी

१. रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल री।
कान्ह मोहन वेल, सखी कान्ह मोहन वेल री।।

२. रासमां विनोद हांस, हांसमा करूं विलास।
पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल री।

३. वालैयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी।
कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल री।।

४. सखियों करती मान, तेणे विरह ना कीधां पान।
विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल री।।

५. आतुर करी सर्वे जन, मीठडां बोले वचन।
हेतसूं हरतो मन, एवो अलवेल री।।

६. इंद्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विस्वास।
खिण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल री।।

रास-प्रकरण-३६

१०

१. आवी केसरबाई कहे रे बेहेनी, सुणो बात कहूं तमसूं।
भली रामत वाला सूं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसूं।।

२. अनेक प्रकार करो रे बेहेनी, हूं नहीं मूकूं प्राण नो नाथ।
बीजी रामत जई करो रे बेहेनी, आतां ऊभो छे एवडो साथ।।

३. केम रे मूकूं कहे केसरबाई, तमने रमतां थई घणी वार।
हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राण तणो आधार।।

४. सुणो केसर बाई वात अमारी, इंद्रावती कहे आ वार।
लाख वातो जो करो रे बेहेनी, पण हूं नहीं मूकूं निरधार।।

५. सिखामण दिए रे वालोजी, कोई न नमे रे लगार।
त्यारे रूप कीधां रंगे रमवा, संतोखी सर्वे नार।।

६. भीडीने मलियो बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम।
इंद्रावती कहे केसरबाई, वाले पूरण कीधां मन काम।।

रास-प्रकरण-३६

११

राग गोडी

१. अणी हांरे झीलण रंग सोहामणां रे, आपण झीलसूं वालाजी ने साथ।
रामत रमीने सहु आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास।।

२. श्री राज कहे स्यामा जी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह।
साथ सहुने मनोरथ, कांई रहयो छे एक एह।।

३. वेलडिए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए।
फले रस चढया कई भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए।।

४. जल उछाले उछरंगसू, सहु वालाजीने छांटे।
वालोजी छांटे एणी विधसूं, त्यारे सर्व नासंतियो कांठे।।

५. जमुनाजी ने कांठडे, कांई द्रुमवेलीनी छांहें।
साथ सहु मलीने सामटो, कांई आव्यो ते आनंद मांहें।।

६. बेठा मली आरोगवा, कांई सोभित जुजवी पांत।
सो सखी सो इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत।।

रास-प्रकरण-४५

१२

राग मलार

१. मारा वालाजी रे वल्लभ, कहूं एक विनती रे।
मारा करम तणी रे कथाय, सुणो मारी आप वीती रे।।

२. वरखा रूते करमे काढी वदेस, अवगुण हुता अपार रे।
हवे एणे समे धणी विना, लेसे कोण सार रे।।

३. मोरलिया करे रे किंगोर, सुणीने गरजना रे।
मारो जीव आकुल व्याकुल थाय, सुणी स्वर कोयलना रे।।

४. इंद्रावती कहे अवगुण, विसारो अमतणा रे।
में जे कीधां रे अपार, वालाजीसूं अति घणा रे।।

५. धरा ए कीधो सिनगार, डूंगरडा नीलया रे।
एणी रूते रे आधार, करो सीतल काया रे।।

६. मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे।
एणे वचने इंद्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे।।

खटरूती-प्रकरण-१

१३

१. सरदनी रूत रे सोहामणी रलियामणी,
मूने वालाजी विना केम जाए हो वालैया।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने खिण वरसां सो थाय, हो वालैया।।

२. वालीजी रे डोहलाते जल वही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर।
पिउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखूं मन धीर।।

३. वालाजी रे एम तमे मोसूं कां करो, मारा हो प्राणनाथ।
आवी करूं तमसूं गुझडी, मारी वीतकनी जे वात।।

४. वालाजी रे तमे तो घणुंए जणावियुं,पण में नव जाण्युं हूं अधम।
जो हूं जाणूं थासे एवडी, तो तमने मूकूं केम।।

५. वालाजी रे पूनम रातनो चांदलो, कांई वन सोभे अपार।
रासनी रातनो ओछव, मूने कां न तेडी आधार।।

६. हवे चित आणी चरणे तेडजो, विरहणी टालो आधार।
एणे वचने इंद्रावतीने, वालो तेडी लेसे तत्काल।।

खटरूती-प्रकरण-२

१४

राग प्रभाती

वचन वालाजी ना वालेरा रे लागे।

१. मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वाण रे।
वचन जे तारतम तणा रे, हवे नहीं मूकूं निरवाण रे।।

२. घणा दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे।।

३. पोते प्रगट पधारया छो, आडा देओ छो वृज ने रास।
इंद्रावतीसूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब।।

४. आपोपूं ओलखावी करी रे, मूने दीधो वदेस।
अवगुण जे में कीधां मारा वाला, तेणी तमे हजी न मूको रीस।।

५. मूने माया लेहेर हुती जोरावर, ते माटे कीधां अवगुणो।
अंध थको ज्यारे पडे रे कुआमां, त्यारे केहो वांक तेह तणो।।

६. साथ हतो जे इंद्रावती पासे, वाले पूरी तेनी आस रे।
सकल मनोरथ पूरण थया रे, फलिया ते रास प्रकास रे।।

खटरूती-प्रकरण-८

१५

राग मलार

१. पिउजी तमे सरदनी रूते रे सिधाव्या,
हांरे मारा अंगडामां विरह वन वाव्या।
ए वन खिण खिण कूपलियो मूके, हां रे मारूं तेम तनडूं सूके।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. वाला हूं तो पिउ पिउ करी रे पुकारूं,
पिउजी विना दोहेला धणां रे गुजारूं।
हूं तो दुखड़ा मांहें ना माहेंज मारू, हूं तो निस्वासा अंग मां उतारूं।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. वाला मारा भादरवे ते नदी नाला भरिया,
पिउजी निरमल जल रे उछलिया।
वाला मारा गिर डूंगर खलखलिया,
पिउजी तमे एणे समे हजिए न मलिया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. वाला मारा एक वार जुओ वनडू आवी, हां रे चांदलिए जोत चढ़ावी।
वेलडिए वनस्पति रे सोहावी, एणे समे विरहणियो कां विलखावी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती-सरद रूत

१६

राग मलार

१. वाला मारा हेमाले थी हेमरूत हाली,
ए तो वेरण आवी रे विरहणियो ऊपर चाली।
वृजडी वीटी रे लीधी वचे घाली,
पिउ जी तमे हजिए कां बेठा आप झाली।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. रे विरही तमे विरहणियों ने कां न संभारो,
नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो।
वाला मारा दोष घणो रे अमारो,
पिउ जी तमे एणी विधे अमने कां मारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. वाला मारा कारतकियो अंगडा कापे,
नाहोलिया तारो नेहडो वाले मूने तापे।।
वाला मूने गुण अंग इंद्रियों रे संतापे,
पिउजी विना दुखड़ा ते सहु मूने आपे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. रे वाला मारा सियालो सुखणियो मागे,
पिउजीना सुखडामां सारी रात जागे।
वालाजीने विलसे रे वड भागे,
अमने तो मंदिरियों मसांण थई लागे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती-सीत रूत

१७

राग मलार

१. वाला रूतडी आवी रे सीतलडी लूखी,
वेलडियो वन जाय रे सर्वे सूकी।
वसेके वली वाले रे उतरियो फूकी,
पिउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. नाहोलिया निस्वासा धमण धमाय,
हांरे मारा अंगडामां अगिन न माय।
वाला तारी झालडियो केमे न झंपाय,
पिउजी तारो एवडो स्यों कोप केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. वाला मारा पोष महिनो रे आव्यो,
हांरे अम दुखणियो ने दुख पूरा लाव्यो।
वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो,
हांरे मारूं चीरी अंग मीठडे भराव्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. रे वाला मारे मंदिरिए आवी ने आरोग,
हांरे अम विरहणियों ना टालो रे विजोग।
हां रे सुंदर सेजडीनो आवी लेओ भोग,
एता सकल तमारो संजोग।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती-सीत रूत

१८

राग मलार

१. वाला मारा आवी रे रूतडी वसंत,
चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत।
वाला वनडू मोरयूं रे कूपलियो करंत,
एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. एणे समे अबीर गुलाल उछलियां,
चोवा चंदन केसर कचोले भरिया।
नाहो नारी रमे रे फागणिये मलिया,
एणे समे अमें तो घणूं कलकलिया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. वाला वन फागणियो रे उछाले,
पंखीडा करे रे कलोल बेठा माले।।
हांरे अम विरहणियो ना चितडा चाले,
आंगणडे ऊभियो पंथडो निहाले।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. वाला मूने ए दिन केम करी जाय,
पिउ जी विना खिण वरसां सो थाए।
वाला मूने विलखंतां रैणी विहाय,
पिउ जी विना ए दुख केने न केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती–वसंत रूत

१६

राग मलार

१. वाला मारा आवी रे रूतडी ग्रीखम,
अमृत रस लावी रे फल उत्तम।
वन फल पाकीने थया रे नरम,
वाला तमे एणे समे न आवो केम।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. वाला मारा त्रट जमुनाना वृंदावन,
हांरे टाढी छांहेडी तले रे कदम।
पिउजी इहां देता रे पावलिए पदम,
ते अमे विलखूं छूं वालाने वदन।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. वैसाख फूल्यो रे वेलडिए वेहेकार,
भमरा मदया करे रे गुंजार।।
पंखीडा अनेक कला रे अपार,
वाला वन विलस्या तणी आवार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. सखियो तारा सुखडा संभारीने रूए,
हवे अम विजोगणियों ने कोण आवी जुए।
पिउजी विना आंसूडा ते कोण आवी लुए,
वाला पछे आवसोसूं अममुए।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती–ग्रीखत रूत

२०

राग मलार

१. पावसियो आव्यो रे वरखा रूत मांहें,
भोमलडी ढांकी रे वादलिए छाहे।
अंबरियो गरजे रे वीजलडी वा वाय,
पिउजी विना मारे रे अमने घाए।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. एणे समे भेला सहु घर वारी,
अधखिण अलगां न थाए नर नारी।
परदेस होय ते पण आवे रे संभारी,
पिउजी ऐवी केही अप्राप्त अमारी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. मेघलियो आवीने असाढ़ धडूके,
सेरडियो साम सामी रे ढलूके।
मोरलिया कोईलडी रे टहूके,
एणे समे कंथ कामनियो ने केम मूके।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. पिउजी तमे पेहेली कां प्रीतडी देखाड़ी,
माहेंला मंदिरियो कां दीधां रे उघाडी।।
पिउजी तमे अनेक रंग रमाडी,
हवे तो लई आसमाने भोम पछाडी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती-वरखा रूत

२१

राग मलार

१. वाला मारा खटरूतना बारे मास,
हां रे तेना अहनिस त्रण से ने साठ।
वाला तारी रोई रोई जोई में वाट,
अम ऊपर एवडो कोप कीघा स्या माट।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

२. रे ऊधव तूं भली रे वधामणी लाव्यो,
अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो।।
ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडू रे चढाव्यो,
ऊधव तें दुखड़ा घणूंज देखाडयो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

३. सखियो हवे आपोपूं सहु कोई झालो,
कान्हजी होय तो दोडी जईए चालो।
ए जदुराय नहीं रे गोपियोनों वहालो,
सखियो हवे ऊधव ने गुझडी कां आलो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

४. सखियो मारो जीव जीवन मांहें भलियो,
अमें माया ग्रही तोहे ते पल न टलियो।
ए वालो अम विना कोणे न कलियो,
इंद्रावती कहे अमारो अमने मलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।।

खटरूती-प्रकरण-१७

२२

१. कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर।।

२. तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत।
तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित।

३. स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो।।

४. इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१

२३

राग धना श्री

१. याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी।
आप डारया ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक फेर जी।।

२. सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी।
भेजे धनिए आवेस देय के, अब न्यारे न होए एक खिन जी।।

३. नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी।
एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी।

४. पेहेचानवे को पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी।।

५. पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी।
तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी।।

६. अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-२

२४

राग धना श्री

१. साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी।
धनी मिले आपन को माया में, जिन भूलो ए अवसर जी।।

२. एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान जी।
प्रगट मैं तुमको पेहेले कहया, भी कहूं निरवान जी।।

३. जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी।
पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी।।

४. कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी।
अब कोटक छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-३

२५

राग राम श्री

१. ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे।
पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे।

२. चलना पिउ का सुनते, तोहे सब अंगों अगिन ना आई।
सुनते आग झाला मिने, दौड़ के क्यों न झंपाई।।

३. सब गिरदवाए बन देखाए के, किए धाम मंदिर प्रकास।
ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट में, प्रगट कियो विलास।।

४. अब तारतम कौन केहेसी, कौन विचार कर देसी हेत।
चौदे भवन में इन धनी बिना, ए बानी कोई ना देत।।

५. देत बिछोहा धनी धाम के, तुम क्यों न किया एह विचार रे।
हुती आसा मुखी इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार रे।।
प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-६

२६

१. आपन में बैठे आधार, खेल देखाया खोल के द्वार।
अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथ को न छोडूं निरधार।।

२. ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार।
जानो जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे।।

३. धनी के गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं।
धनी के गुन को नाहीं पार, कर ना सके कोई निरवार।।
४. क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार।
इंद्रावती कहे मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों।।
प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-११

२७

१. मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत।
बिध बिध धनिऐं जगाइया, अजहूं ना घर सूझत।।

२. आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल।
दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल।।

३. आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध।
जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध।।

४. पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर।
उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर।।

५. तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए।
एती आग सिर पर जली, तूं रहया खांगडू होए।।
प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१४

२८

१. मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब।
इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब।।

२. ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन।
तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन।।

३. पेहेले तो तें बुरी करी, अब जिन चूके अवसर।
पिउ तोको वतन में, बुलावत हैं हँसकर।।

४. दुनियां चौदे भवन में, जो देखिए मूल अर्थ।
जो लेवे तेरा निमूना, ऐसा ना कोई समरथ।।

५. तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या न एते सोर।
सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१५

२९

१. मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम।
दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम।।

२. गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए।
सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए।।

३. खेल हँस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ।
दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ।।

४. हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों।
आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों।।

५. कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ।
पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ।।

६. आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछु साथ को, पर तो भी अपने सजन।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१६

३०

१. मेरे साथ सोहागी रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान।
पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान।।

२. माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम।
विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम।।

३. ए जो मांगी तुम माया, सो देखे तीन संसार।
अब साथ पिउ संग चलिए, ज्यों पिउ पावें करार।।

४. तुमें धनी बिना कौन दूसरा, ए उड़ावे अंधेर।
तुम देखो साथ विचार के, जिन भूलो इन बेर।।

५. ए ठौर ऐसा विखम, नास होए मिने खिन।
स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन।।

६. तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग।
पांउ पकड़ कहे इन्द्रावती, उठ खड़े रहो जाग।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१७

३१

१. आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्री धाम।
ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम।।
२. प्रेम प्याला भर भर पीऊँ, त्रैलोकी छाक छकाऊँ।।
चौदे भवन में करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पिउ पास जाऊं।।

३. खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पिउ चित ल्याए।
ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए।।

४. धिक धिक पड़ो मेरी पांचो इंद्री, धिक धिक पड़ो मेरी देह।
श्री स्याम सुंदरवर छोड़ के, संसार सों कियो सनेह।।

५. धिक धिक पड़ो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम
बिना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम।।

६. तुम तुमारे गुन ना छोडे, मैं बोहोत करी दुष्टाई।
मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-२२

३२

१. भट परो तिन नींद को, जिन सोहागनियां दैयां भुलाए।
तो भी नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो धनी थके बुलाए बुलाए।।

२. आइयां कातन वालियां, मिनो मिने रब्द कर।
किन किन मिहीं कातिया, सांचा सनेह धर।।

३. कोई बड़ाई ले बैठियां, सो गैयां आपको भूल।
उठियां अंग पछताए के, होए सूरत बेसूल।।

४. किनहूं कात्या सोहाग का, सूत भर भर सेर।
कोई बैठियां पाँउ पसार के, ले बैठी हिरदे अंधेर।।

५. एक सुत देखे और के, उमर सब गई।
फेरा देवें रूपवंतियां, कबूं पूनी हाथ न लई।।

६. जब सूत सैयां देखिया, तब जाहेर हुईयां सब कोए।
पर जिन कछूए न कातिया, छिपाए रही मुख सोए।।

७. एक लेसी सोहाग सुलतान का, सोई सोहागिन।
सो बातां सिर उठाए के, करसी बीच सैयन।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-२५

३३

१. बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।।

२. उपाय किए अनेकों, पर काहूं ना लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।।

३. कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं ना सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।।

४. अबलों काहूं ना जाहेर, श्री धाम के धनी।
खोले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी।।

५. ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर।
पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर।।

६. सो निध जाहेर इत हुई, धंन धंन संसार।
धंन धंन खंड भरथ का, धंन धंन नर नार।।

७. ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उडाऊँ।
कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊँ।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-३१

३४

१. गुन केते कहूँ मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी।।

२. बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी।
रास के सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी।।

३. कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी।।

४. सेहेजल सुख में झीलते, काहूं दुख ना सुनिया नाम जी।
सो माया में इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी।।

५. कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।।

६. आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।।

प्रकास हिन्दुस्तानी-प्रकरण-३६

३५

१. सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम।
सो बीतक कहूँ तुमको, उड़ जासी सब भरम।।

२. तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।

३. ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रहयो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।।

४. ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों न छूटे बंध।
या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।।

५. निज बुध आवे अग्याएं, तोलों न छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।।

६. ए तो कही इन इंड की, पिया पूछयो जो प्रश्न।
कहूँ और अजूं बोहोत हैं, वे भी सुनो वचन।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१

३६

राग श्री सामेरी

१. पिया मोहे स्वांत न आवहीं, ना कछू नैनों नीर।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर।।

२. पिया बिन कछुए न भावहीं, जानूं कब सुनों पिया बैन।
जोलों पिउ मुझे न मिले, तोलो तलफत हों दिन रैन।।

३. नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार।
बेटो बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार।।

४. इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए।
पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए।।

५. आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन।
कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसम के बिन।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-४

३७

राग देसांकी

१. तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले।।

२. हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।।

३. ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव।।

४. विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।

५. आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।

६. एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-५

३८

राग धना मेवाड

१. विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए, मेरे दुलहा।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा।
विरहनी विलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामनी।।

२. बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन।।

३. विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड ना देखों ब्रह्मांड, देखो दुलहा अपनो एक।।

४. आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अंकुर रही भराए।।

५. विरहा सागर होए रहया, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-६

३९

राग सोख मलार

१. इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।।

२. चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन।।

३. एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन।।

४. इस्क को ए लछन, जो नैनों पलक ना ले।
दौड़े फिरे न मिल सके, अंदर नजर पिया में दे।।

५. नजरों निमख न छूटहीं, तो नाहीं लागत पल।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल।।

६. जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-७

४०

राग श्री धना काफी

१. सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़यो ना जाए।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए।।

२. दरद जो तेरे दुलहा, कर डारयो सब नास।
पर आस न छोड़े जीव को, करने तुम विलास।।

३. मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा न देऊँ जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ।।

४. जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़यो संग।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग।।

५. जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सुहागनी, और व्रध भी राख्यो विरहिन।।

६. तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-८

४१

राग आसावरी

१. एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए।
पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे।।
२. सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब।
अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब।।
३. हुई पेहेचान पिउसों, तब कहयो महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम।।

४. मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप।
कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप।।
५. खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम।।
६. विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।
सोहागिन आतम पिउ की, वतन पार के पार।।
७. ए सुध पिया मुझे दई, अन्दर कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, जो गयो तिमर सब नास।।
८. आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास।
उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-६

४२

राग श्री

१. सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात।
सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात।।
२. जोलों पिउ परदे मिने, विस्व विगूती तब।
सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब।।
३. सत जो ढांप्या ना रहे, उड़ाय दियो अंधेर।
नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर।।
४. ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और।
आद करके अबलों, किन कहया ना पिया ठौर।।
५. बात बड़ी इन खसम की, सो क्यों कर ढापूं अब।
सुख लेने को या समें, पीछे दुनियां मिलसी सब।।

६. और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास।
होसी सब में आनंद, चौदे तबक प्रकास।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१०

४३

१. पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।।
२. आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन।।
३. आकीन ना छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन।
प्यारी पिउ के कारने, जीव को ना करे जतन।।
४. जोलों पिउ सुध ना हुती, सोहागिन अंग में पिउ।
जब पिया जाहेर हुए, तब ले खड़ी अंग जिउ।।
५. जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार।।
६. जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-११

४४

१. अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम।।

२. भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।।

३. मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान।
खेले मन के भाव तें, सब आप अपनी तान।।

४. नाहीं जासों पेहचान कबहूं, तासों करे सनमंध।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध।।

५. कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१३

४५

१. कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमान।।

२. कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन।।

३. कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन।।

४. कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवट ले।
खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह।।

५. खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-१५

४६

१. अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।।
सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूँ ।।टेक।।

२. अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर।।

३. एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत।
अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत।।

४. हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर।।

५. कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, ना सहूं मुख करमाने।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-२१

४७

१. मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हाँसी का है ठौर।
पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।।

२. साथ जी तुमको उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए हांसी का हवाल।।

३. हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई आड़ी होत अभंग।।

४. जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार।।

५. ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत।
मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-२२

४८

१. अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामे भोग।।

२. अब दुख न देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन।
उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।।

३. प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर।
मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर।।

४. लागोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी।
याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी।।

५. तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप।
मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप।।

६. इन्द्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग।।

कलस हिन्दुस्तानी-प्रकरण-२३

४९

१. अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल।
तो नाम धराया रसूलें, आसिक अपना असल।।

२. आसिक कहया अल्लाह को, मासूक कहया महंमद।
न जाए खोले मायने, बिना इमाम एक सब्द।।

३. फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला कलाम।
सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम।।

४. तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम।
करसी जाहेर मोमिन, आखिर आए इमाम।।

५. बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझें नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन।।

६. बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सबको सुगम जानके, कहूंगी हिंदुस्तान।।

७. बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर।।

सनंध-प्रकरण-१

५०

१. पिया मैं विध विध तोको ढूंढिया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर।।

२. मैं देख्या दिल विचार के, चित्तसों अर्थ लगाए।
इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए।।

३. वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक।।

४. मन चित्त बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए।
खट प्रमान तें रहित है, सो दृढ़ कैसे होए।।

५. ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास।
रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास।।

६. नबी सबद मोहे मद चढ़यो, बढ़यो बल महामत।
अब एक खिन न रहे सकूं, उड़ गई कहुंए स्वांत।।

सनंध-प्रकरण-५

५१

१. अब ढूंढों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर।।

२. अब लछन देखो मोमिन के, जो अरवाहें अर्स घर।
ए वतनी वचन सुनके, आवत हैं तत्पर।।

३. तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहे छल।
छल को छल न लगाहीं, ओ लेहेरी ओ जल।।

४. ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग।।

सनंध-प्रकरण-१२

५२

१. अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग।
कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग।।

२. तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान।
बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान।।

३. हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब।
क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब।।

४. जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान।।

५. जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवें सब भान।
ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान।।

सनंध-प्रकरण-२६

५३

१. सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम।।

२. कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।
किन सुपने ना श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार।।

३. करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन।
तिन काहूं न नजीक, सो इत मिल्या सबन।।

४. चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए।
तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए।।

५. रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार।
आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार।

६. आप इमाम अजूं गोप हैं, होत आगे रोसन नूर।
रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या कायम सूर।।

७. जो लों थे परदे मिने, दुनिया उरझी तब।
सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाहया सुख सब।।

सनंध-प्रकरण-३३

५४

१. तुमको देऊँ सुख जागनी, साथजी मेरे आधार।
भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार।।

२. सुनियो भीम मुकुंदजी, ऊद्धव केसो स्याम।
हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम।।

३. किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान।
साथको सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान।।

४. सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नांहें।।

५. वतन थें पिऊ प्यारियां, आइयां सबे मिल।
इसी रात के बीच में, करने को सैल।।

६. वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर।
कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर।।

सनंध-प्रकरण-४१

५५

१. प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार।।

२. आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह।
ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह।।

३. ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उड़ाए।
बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए।।

४. असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार।
बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्त्र कुमार।।

५. जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम।
मन चाह्या सुख दे सबों, हँसते उठे घर धाम।।

सनंध-प्रकरण-४२

५६

राग श्री मारू

१. पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो।।

२. पीछे ढूंढ़ों घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो।
जब लग घर पावत नहीं अपनों, सो भटकत फिरत भरमानो।।

३. पाँच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंत्रीख क्यों अटकानो।
याके आस पास अटकाव नहीं, तुम जाग के संसे भानो।।

४. नींद उड़ाए जब चीन्होंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो।
तब आपै घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो।।

५. बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानों।
महामत कहे माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो।।
किरंतन-प्रकरण-१

५७

राग श्री मारू

१. बिंद में सिंध समाया रे साधो, बिंद में सिंध समाया।
त्रिगुन सरूप खोजत भए विस्मय, पर अलख न जाए लखाया।।
२. वेद अगम केहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया।
खबर न परी बिंद उपज्या कहां थें, ताथें नाम निगम धराया।।
३. असत मंडल में सब कोई भूल्या, पर अखंड किने न बताया।
नींद का खेल खेलत सब नींद में, जाग के किने न देखाया।।
४. सुपन की सृष्ट वैराट सुपन का, झूठे साँच ढँपाया।
असत आपे सो क्यों सत को पेखे, इन पर पेड़ न पाया।।
५. खोजी खोजे बाहेर भीतर, सो अंतर बैठा आप।
सत सुपने को पारथीं पेखे, पर सुपना न देखे साख्यात।।
६. भरम की बाजी रची विस्तारी, भरमसों भरम भरमाना।
साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना।।
७. सतगुरु सोई मिले जब साँचा, तब सिंध बिंद परचावे।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों, तब बिंद अनेक उड़ावे।।
८. महामत कहे बिंद बैठे ही उड़या, पाया सागर सुख सिंध।
अछरातीत अखण्ड घर पाया, ए निध पूरब सनमंध।।
किरंतन-प्रकरण-२

५८

राग केदारो

१. साधो भाई चीन्हो सब्द कोई चीन्हो।
ऐसो उत्तम आकार तोको दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों।।
२. मानखें देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाए के वृथा गमाइए।
ए तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर।।
३. सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान।
सतगुरु सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे।।
४. सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई।
सब स्यानों की एक मत पाई,पर अजान देखे रे जुदाई।।
५. यामें बड़ी मत को लीजे सार, सतगुर याहीं देखावें पार।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म।।
६. ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहे पुकार पुकार।।
किरंतन-प्रकरण-३

५६

राग श्री गौड़ी

१. साधो हम देख्या बड़ा तमासा
विस्व देख भया मैं विस्मय, देख देख आवत मोहे हासा।।

२. मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवे।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे।।

३. सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाड़े आप अंग।
न करे भजन दोष देवे सांई को, कहे दया बिना न होवे साध संग।।

४. बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम।
अपनों कियो न देखे अंधे, पीछे रोवें दोष दे दे करम।।

५. समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनंद।
भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद।।

६. सतगुरू साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।
हद बेहद सबे समझावे, भाने मनको भरम।।

७. महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटीसे उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख।।

किरंतन-प्रकरण-४

६०

राग श्री केदारो

१. सुनो रे सत के बनजारे, एक बात कहूं समझाई।
या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रहया उरझाई।।

२. आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीऐं दई उलटाई।
बंध पर बंध दिए विध विध के, सो खोली किनहूं न जाई।।

३. चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठे को खेल झुठाई।
प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई।।

४. लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई।
एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई।।

५. कोट सेवक करो नाम निकालो, इष्ट चलाओ बड़ाई।
सेवा कराओ सतगुर केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई।।

६. अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड़ बड़ी भाई।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई।।

७. सत चाहो सो सब्द चीन्हों, सो आप न देवे देखाई।
जिन पाया तिन मांहें समाया, राखत जोर छिपाई।।

८. महामत कहे सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई।
झूठी छूटे साँची पाइए, सतगुर लीजे रिझाई।।

किरंतन-प्रकरण-५

६१

राग मारू

१. हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार।
अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार।
तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत एही संभार।।

२. तूं कहा देखे इन खेल में, ए तो पड़यो सब प्रतिबिंब।
प्रपंच पांचों तत्व मिल, सब खेलत सुरत के संग।।

३. ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधें संसार।
ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल बिना विस्तार।।

४. ए तूं देख नाटक निमख को, अब करे कहा विचार।
पाउ पल में उलंघ ले, ब्रह्मांड सुन्य निराकार।।

५. तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तूं करे पांउं बिना पंथ।
निरंजन के परे न्यारा, तहां है हमारा कंथ।।

६. अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों विलास।
महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस।।

किरंतन-प्रकरण-७

६२

राग विलावर

१. हो भाई मेरे वैष्णव कहिए वाको, निरमल जाकी आतम।
नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म।।

२. इस्क लगाए पिया सों पूरा, खेले अबला होए अहनिस।
ओ अंधे अग्यानी भरम में भूले, पर या ठौर प्रेम को रस।।

३. जब आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, तब भयो आतम निवेद।
या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद।।

४. उतपंन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार।
प्रेम बिना सुख पार को नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार।।

५. साँचा री साहेब साँचसों पाइए, साँच को साँच है प्यारा।
या वैष्णव की गत देखो रे वैष्णवों, महामत इनसे भी न्यारा।।

किरंतन-प्रकरण-८

६३

राग विलावर

१. कहा भयो जो मुख थें कहयो, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत है, अंग होत है टूक टूक।।

२. मुख के सब्द मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार।
पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार।।

३. वाको आग खाग बाघ नाग न डरावे, गुण अंग इंद्री से होत रहित।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत।।

४. लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।।

५. देखन को हम आए री दुनियाँ, हमहीं कारन कियो ए संच।
पार हमारे न्यारा नहीं, हम पार में बेठे देखें प्रपंच।।

६. जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत है न्यारी।
दुःख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी।।

किरंतन-प्रकरण-६

६४

राग श्री गौड़ी

१. वचन विचारो रे मीठड़ी, वल्लभाचारज बानी।
अर्थ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी।।

२. कौन तुम और कहां तें आए, और कहां तुमारा घर।
ए कौन भोम और कहां श्री कृष्ण जी, पाओगे कौन तर।।

३. ए बानी तो अपरस करे आतम, तुम अपरस करो बाहेर अंग।
आकार अपरस किए कहा होए, इने आतम सो कैसो सनमंध।

४. तुम झूठ को साजो समारो, जो झूठा होए जासी।
सांचे सुख देवे जो सांचा, सो कबे ओलखासी।।

५. मांहें अंधेर और वैष्णव कहावो, ए तो बातें सब फोक।
ज्यों धूरत नाम धरावे धनवंत, पासे नहीं दमड़ी रोक।।

६. कुकरम करो कुटिल गत चालो, आगे पीछे चींटी हार।
वल्लभ कुंअर कितने को बरजे, कई उलटे सेवक संसार।।

७. वैष्णव होए सो वचन मानसी, और जो वल्लभ वाणी से टलिया।
महामत कहे सो काहे को जनम्या, गर्भ मांहें क्यों न गलिया।।

किरंतन-प्रकरण-१२

६५

राग सोरठ

१. धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार।
तुम चैन ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार।।
२. कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।।
३. चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल।
अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल।।
४. सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल।
उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बल।।
५. सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर।।
६. तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन।
आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्यों ए मन।।
७. आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन।
मृतक को जीवत करो, पर घर की न होवे गम।।
८. सतगुरू सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।
९. ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर।।
किरंतन-प्रकरण-१४

६६

राग श्री

१. पतित सिरोमन यों कहे।
जो मैं किए है बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वैष।।
२. पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत।
ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत।।
३. दुनियां सकल चलत हैं पैंडे, जो साध बड़ों ने बताया।
उलटा कोई नहीं रे यामें, पतित किने न केहेलाया।।
४. सूर जैसे पतित कहावे, और की सोभा आप देवे।
ओ अंधा राँक गरीब साध जो, सो क्या रे पतीती लेवे।।
५. या जग में ए क्या रे पतीती, कोई न पोहोंच्या पार।
बोहोत दौड़े सो सुन्य तोड़ी, आड़ी पड़ी निराकार।।
६. मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई।
सुन्य निराकार पार परआतम, मैं ता पर दृष्ट चढ़ाई।।
७. अब अछर के पार मैं जुध बनाऊं, सकल आउध अंग साजुं।
प्रेम की सैन्या प्रगट चलाऊँ, कंठ अछरातीत मिलाऊँ।।
८. पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोको इन चोटें अगिन लगाई।
बोहोत बरस मैं राखी अंदर, अब तो ढाँपी न जाई।।
९. पार के पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखण्ड सुख पाया।
पतितन के सिर महामत मुकुट मनि, जिन ए जुध जग में लखाया।।
किरंतन-प्रकरण-१५

६७

राग श्री

१. सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू न मिले तबीब।
चौदे भवन में न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब।।

२. आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई परआतम।
ए रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे न मुख ब्रह्म।।

३. सो हबीब क्यों पाइए, कई कर कर थके उपाए।
सास्त्र देखे सब सब्द, तिन दुख दिया बताए।।

४. सखी ताथें दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार।
सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पिउ मनुहार।।

५. दुख प्यारो है मुझको, जासों होए पिउ मिलन।
कहा करूं मैं तिन सुख को, आखिर जित जलन।।

६. रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख।
उठते बैठते दुख चाहिए, यों पिउ सों होइए सनमुख।।

७. महामत कहे इन दुख को, मोल ना कियो जाए।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताए।।

किरंतन-प्रकरण-१७

६८

राग श्री

१. मैं तो बिगड़या विश्व थें बिछुरया, बाबा मेरे ढिग आओ मत कोई।
बेर बेर बरजत हों रे बाबा, न तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई।।

२. मैं लाज मत पत दई रे दुनी को, निलज होए भया न्यारा।
जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा।।

३. लोक सकल दौड़त दुनियां को, सो मैं जान के खोई।
मैं डारया घर जारया हंसते, सो लोक राखत घर रोई।।

४. मैं कहूं दुनियां भई बावरी, ओ कहे बावरा मोही।
अब एक मेरे कहे कौन पतीजे, ए बोहोत झूठे क्यों होई।।

५. सतगुरु संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई।
महामत कहे मैं या विध बिगड़या, तुम जिन बिगड़ो भाई।।

किरंतन-प्रकरण-१८

६६

राग श्री

१. तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई।
जाही सों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई।।

२. मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान।
स्याने दिवाने संग क्योंकर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान।।

३. मैं त्रिलोकी अगिन कर देखी, दुनियां को सो सुख।
दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विख।।

४. जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई।
डर के उबट चल्या उबाटे, बाट बड़ी मैं खोई।।

५. मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत सरम।
लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम।।

६. देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख न खोलें।
आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें।।

७. अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र।
महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप।।

किरंतन-प्रकरण-१६

७०

राग श्री सारंग

१. चल्यो जुग जाए री सुध बिना।
सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना।

२. मूल प्रकृती मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन।
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन।।

३. प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन।।

४. तब जीव को घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन।
गुर सिष्य नाम बोहोतों धरे, पर ए सुध परी न किन।।

५. ऊपर तले मांहें बाहेर, खोज्या कैयों जन।
नेहेचल न्यारा सबन से, ए ठौर न पाई किन।।

६. क्यों सरूप है प्राकृत को, क्यों मोह क्यों सुंन।
क्यों सरूप जो काल को, ए नेहेचे करी न किन।।

७. कौन सरूप हैं आतमा, परआतम कह्या क्यों भिन।
सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे भान्यो न किन।।

८. महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन।
देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन।।

किरंतन-प्रकरण-२१

७१

राग श्री

१. रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार।
मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार।।

२. अपनी छायासों आप बिगूती, बल खोए चली हार।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार।।

३. सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार।
समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार।।

४. रे मूढ़मती या फंद में उरझे, उपजत नहीं विचार।
आप न चीन्हें घर न सूझे, ना लखें रचनहार।।

५. अपनी मत ले ले साधू बोले, सब्द भए अपार।
बोहोत सबद को अर्थ न उपजे, या बल सुपन धुतार।।

६. यामें सतगुरु मिले तो संसे भानें, पैंडा देखावे पार।
तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार।।

७. तब बल न चले इन नारी को, लोप न सके लगार।
महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार।।

किरंतन-प्रकरण-२२

७२

राग गौड़ी

१. रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना।
ए मदमाती अपने रंग राती, करत मन का मान्या।।

२. रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना।
चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना।।

३. रे हो तूं कर तेरी होत अबेरी, आप न देखे उरझाना।
अब तूं छोड़ सकल बिध, जात अवसर तेरा जान्या।।

४. एही सब्द एक उठे अवनी में, नहीं कोई नेह समाना।
पेहेचान पिउ तूं अछरातीत, ताही से रहो लपटाना।।

५. अहनिस आवेस हुअड़ा अंग में, फिरया दिलड़ा हुआ दिवाना।
महामत प्रेमें खेले पिया सों, ए मद है मस्ताना।।

किरंतन-प्रकरण-२३

७३

राग श्री गौड़ी

१. रस मगन भई सो क्या गावे।
बिचली बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे।।

२. बिचले नैन श्रवन मुख रसना, बिचले गुन पख इंद्री अंग।
बिचली भांत गई गत प्रकृत, बिचल्यो संग भई और रंग।।

३. बिचली दिसा अवस्था चारों, बिचली सुध न रही सरीर।
बिचल्यो मोह अहंकार मूल थें, नैनों नींद न आवे नीर।।

४. बिचल गई गम वार पार की, और अंग न कछु ए सान।
पिया रस में यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गान।।

किरंतन-प्रकरण-२५

७४

राग मारू

१. खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।।

२. भगत होत भगवान की, किव कर कहावें सिध साध।
गुन अंग इंद्री के बस परे, ताथें बांधत बंध अगाध।।

३. सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखें बिगारयों वैराग।
डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।।

४. गोविंद के गुन गाए के, तापर मांगत दान।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान।।

५. उदर कारन बेचें हरी, मूढ़ो एही पायो रोजगार।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार।।

६. बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।।

७. जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सों गोष्ट ग्यान।।

किरंतन-प्रकरण-२६

७५

राग श्री जेतसी

१. कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्म को ।।टेक।।
तुम तीन सरीर तज भए ब्रह्म, पायो है पूरन ग्यान।
जो लों संसे ना मिटे, साधो तो लों होत हैरान।।
२. वेदांती संतों महंतो, तुम पायो अनुभव सार।
निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार।।
३. पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार।
जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार।।
४. पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन।
त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन।।
५. विष्णु ब्रह्मा रुद्र जनमें, हुई तीनों की नार।
निरलेप काहू न लेपहीं, नारी है पर नाहीं आकार।।
६. लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान।
थिर चर आद अनाद लों, ए भरी सो चारों खान।।
७. ना कछु ना कछु ए कहें, ओ सत-चिद-आनंद।
असत सत को ना मिले, ए क्यों कर होए सनमंध।।
८. निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर।।
किरंतन-प्रकरण-२७

७६

राग श्री आसावरी

१. मैं पूछों पांड़े तुम को, तुम कहो करके विचार।
सास्त्र अर्थ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार।।
२. माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन।
अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रह्म वतन।।
३. कोई कहे ब्रह्म आतमा, कोई कहे पर आतम।
कोई कहे सोहं सब्द ब्रह्म, या बिध सब को अगम।।
४. कोई कहे ए सबे ब्रह्म, रहत सबन में व्याप।
कोई कहे ए सबे छाया, नांही यामें आप।।
५. कोई कहे ओ निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग।
कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग।।
६. ए संसे सब समझाए के, कोई अंग करे उजास।
सो गुर मेरा मैं सेवों ताए, सुध चित होए दास।।
७. समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख।
तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख।।
८. महामत सो गुर कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर।
आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर।।
किरंतन-प्रकरण-२८

७७

राग रामकली

१. संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम।
मैं पूछत हों पर आतमा, मेरा भानो एही भरम।।

२. जिन जानो विवादे पूछे, मैं जग्यासू करों खोज।
जो लों धोखा न मिटे, साधो तो लों न छूटे बोझ।।

३. ऊपर तले माहें बाहेर, दसों दिसा सब माया।
खट प्रमान थें ब्रह्म रहित हैं, सो क्यों कर दृढ़ाया।।

४. भोमका सात कही वसिष्टें, तामें पांचमी केवल विदेही।
छठी को सब्द ना निकसे, तो सातमी दृढ़ क्यों होई।।

५. पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे।
ए संसे भानो आतम के, ज्यों परआतम बूझे।।

६. परमहंस बिन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर।
कहे महामत महादिसा धनी की, कोई कर दयो जुदे खीर नीर।।

किरंतन-प्रकरण-२६

७८

राग श्री सोरठ

१. कलि में देख्या ग्यान अचंभा।
बातन मोहोल रचे अति सुंदर, चेजा जिमी न थंभा।।

२. अंग न इंद्री अंतस्करन वाचा, ब्रह्म पोहोंचे कोए।
यों कहे साख पुरावें श्रुती, फेर कहें अनुभव होए।।

३. अहंब्रह्म अस्मी होए के बैठें, तत्वमसी और कहावें।
स्वामी सिष्य न क्रिया करनी, यों महा वाक्य दृढ़ावें।।

४. खट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप।
माया ईश्वर त्रिगुन हम थें, हमहीं रहे सबमें व्याप।।

५. ऐसे कोट ब्रह्मांड होवे पल में, अद्वैत के हुकम।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम।।

६. सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए।
होसी प्रगट प्रकास निज बुध का, सो महामत देसी बताए।।

किरंतन-प्रकरण-३१

७९

राग श्री गौड़ी

१. भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म दिखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या।
ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या।।

२. सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा।
तुम पारब्रह्म सों परच्या नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा।।

३. काल आवत कबूं ब्रह्म भवन में, तुम क्यों न विचारो सोई।
अखंड सांई जो यामें होता, तो भंग ब्रह्मांड को न होई।।

४. तुम केवल काल तत्व ग्यानी, ब्रह्म ग्यानी भए।
सब दरवाजे खोजे साधो, पर सुन्य छोड़ कोई ना गए।।

६. कई दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुन्य सब देख्या।
आखिर जाए के प्रेम पुकारया, तब जाए पाया अलेखा।।

७. भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपने में, महामत कहे यों पाइए।
पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए।।

किरंतन-प्रकरण-३२

८०

१. रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन।
तुम मोही सों न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन।।

२. मेरी सेवा जो करते साथीडे, फूलड़े बिछावते सेज।
सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज।।

३. मैं पाले प्यार करके, सो वैरीड़े भए तिन ताल।
मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुमें डारे ले जम जाल।।

४. मैं तो आई तुम खातिर, तुम जानी नहीं सुपन।
मैं तो सुपना हो गई, अब दुखड़े देखो चेतन।।

५. पेहेले क्यों न संभारिए, काहे को पड़िए जम फांस।
लाख चौरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास।।

६. घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें बास।
तब गुन बस आपे होवहीं, गयो तिमर सब नास।।

७. महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर।
धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मंदिर।।

किरंतन-प्रकरण-३४

८१

राग सिंधुड़ा

१. वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो,
वासना रूदन करे जल धार।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी,
जे कोई हुती तामसियों सिरदार।।

२. कलकली कामनी वदन विलखाविया,
विस्वमां वरतियो हा हा कार।
उदमाद अटपटा अंगथी टालीने,
माननी सहुए मनावियो हार।।

३. पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो,
न कांई जारवंतियों विना जार।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों,
रहियो अंग दाग लगावन हार।।

४. स्या रे एवा करम करया हता कामनी,
धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही,
कहे महामती मारा भरतार।।

किरंतन-प्रकरण-३५

८२

१. हांरे वाला बंध पड़या बल हरया तारे फंदड़े,
बंध विना जाए बांधियो हार।
हँसिए रोइए पड़िए पछताइए,
पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।।

२. जेहेर चढ़यो हाथ पांउं झटकतियो,
सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुख थाय साथने ततखिन,
गुणवंता गारूडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।।

३. मांहें धखे दावानल दसों दिसा,
हवे बलण वासनाओं थी निवार।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल,
मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।।

४. छल मोटे अमने अति छेतरया,
थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना,
राखो रोतियों सुख देयो ने करार।।

किरंतन-प्रकरण-३७

८३

राग श्री

१. करनी तुमारी मेरी मैं तोली, जैसे सत असत।
हो धनी मेरे, एती है तफावत ।।

२. पिया ऐसी निपट मैं क्यों भई, कठीन कठोर अति ढीठ।
श्री धाम धनी पेहेचान के, फेर फेर देत मैं पीठ।।

३. अंदर परदा उड़ाइया, तो भी न बदल्या हाल।
नकस न मिटयो मोह मूल को, ताथें नजरों न नूरजमाल।।

४. आंखा क्यों उठाऊंगी, मुझे मारेगी बड़ी सरम।
ऐसी कबूं किन न करी, सो मैं किए चंडाल करम।।

५. रोम रोम कई कोट अवगुन, ऐसी मैं गुन्हेगार।
ए तो कही मैं गिनती, पर गुन्हें को नाहीं सुमार।।

६. धनी जी के गुन मैं क्या कहूं, इन अवगुन पर एते गुन।
महामत कहे इन दुलहे पर, मैं वारी वारी दुलहिन।।

किरंतन-प्रकरण-४१

८४

राग श्री काफी

१. मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं का वाहो।
मीठा ते मुखना लऊं मीठड़ा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ।।

२. सनेह सनमंधडो समझावीने, अंतराय आडी टाली।
हवे अधखिण विरह सही न सकूं, मारे न आवे अवसरियो वाली।।

३. हवे विलखूं छूं वाला विना, हूँ तो प्रेम नी बांधी पिडाऊं।
कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हूँ निस दिवस फड़कला खांऊं।।

४. हवे कहाने वालाजी केम करूं, केणी पेरे रेहेवाय।
एम करता इन्द्रावती ने मंदिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय।।

किरंतन-प्रकरण-४२

८५

१. विनता विनवे रे पिउजी, रसिया तमें केहेवाओ।
तो एकलड़ा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ।

२. जो अलवेला एवा तमें, तो मंदिरिऐं न आवो केम म्हारे।
हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलड़े बंधाणी छूं तारे।।

३. तूं तो मूने जाणे छे जोपे, मैं तो घणी खीदड़ी खुदावी।
अनेक विनवणी कीधी तें, तो हूं तारे वस आवी।।

४. हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इंद्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई।।

किरंतन-प्रकरण-४३

८६

१. म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो।
हूं ता एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो।

२. ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, ते ततखिण रंग पलटाओ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो।।

३. प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे।।

किरंतन-प्रकरण-४४

८७

प्रीत प्रगट केम कीजिए,

१. कीजिए तो छानी छिपाए, मेरे पिउजी।
तू तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पिउजी।।

२. तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार।
तूं रोक रह्यो मोहे राह में, घड़ी भई दोए चार।।

३. गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार।
तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार।।

४. सारी फारी कंठसर टोरी, टोरयो नवसर हार।
अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार।।

५. अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग।
अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग।।

किरंतन-प्रकरण-४६

८८

राग श्री गौड़ी

१. खोज थके सब खेल खसम री।
मन ही में मन उरझाना, होत न काहू गम री।

२. मन ही बांधे मन ही खोले, मन तम मन उजास।
ए खेल सकल है मन का, मन नेहेचल मन ही को नास।।

३. मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।।

४. मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन।।

५. मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।।

६. सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मन ही में ब्रह्म ।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।।

किरंतन-प्रकरण-४७

८९

राग केदारो

१. खिन एक लेहु लटक भंजाए।
जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए।।
२. हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए।।
३. आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।।
४. जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पहोंच्यों आए।।
५. पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए।।
६. देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रूदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए।।
किरंतन-प्रकरण-४८

९०

१. बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो।।
२. नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी।
लोक माहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधुआ नारी।।
३. नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आड़ज बांधे आवी।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी।।
४. वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईडा लीधां।
कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां।
किरंतन-प्रकरण-५०

६१

राग श्री

१. सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूं।।

२. ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार।
ए मोह अहंते उपजें, ताथें छूटत नहीं विकार।।

३. सुन्य निराकार पार को, खोज खोज रहे कई हार।
बोहोतों बहुबिध ढूढ़यां, पर किया न किने निरधार।।

४. ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और।
बुधजी के रोसन थें, प्रकास होसी सब ठौर।।

५. ब्रह्मसृष्ट जाहेर करी, बुधजीएं इत आए।
अछरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए।।

६. ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।

७. सब पर हुआ कलस, प्रेम आनंद भरपूर।
महामत मोह अहं उड़यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर।।

किरंतन-प्रकरण-५२

६२

राग श्री

१. हो साथजी वेगे ने वेगे, वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को ।।टेक।।
कारज कारन की बात अति बड़ी, याको क्यों कहिए अवतार।
रे साथ जी हुई अखंड निध पांचों भेली, कियो सो बड़ो विस्तार।।

२. धनी मैं अरधांग अछर मुझ माहीं, बुधजी बोले सो कई प्रकार।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेंहेंदी सिर मुद्दार।।

३. आई नूरबुध वैराट माहीं, विस्व करी सो निरविकार।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगे गाऐं सो मंगल चार।।

४. सत बरत्यो त्रिगुन त्रैलोकी, असत न रही लगार।
काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार।।

५. महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार।
हम उठ के आनंद करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार।।

६. तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिनमें देखे खेले संग आधार।
धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार।

किरंतन-प्रकरण-५४

६३

राग श्री धवल

१. आए आगम बानी इत मिली, विस्व मुख करत बखान।
कौल सबन के पूरन भए, आए सो पोहोंचें निसान।।

२. चेतो सबे सत वादियों, सुनियो सो सतगुर मुख बान।
धनी मेरा प्रभु विस्व का, प्रगटिया परवान।।

३. पेहेले मंडल में मांगी मुझे, सो आए ब्याही इत।
कौल किया लिख्या सास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत।।

४. मैं जो आई ब्याहन दुलहे को, दुल्हा आए मुझ कारन।
बांधे पालवसों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन।।

५. धनी आए मेरे लाड़ पालने, वतन पार के पार।
कारज कारन महाकारन से, न्यारी हों इन पिउकी नार।।

६. कहे महामत ए सो खेल, जो तुम मांग्या था चित दे।
देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए।।

किरंतन-प्रकरण-५५

६४

राग श्री काफी

१. कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।।

२. प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईस्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार।।

३. जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब।।

४. चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार।
बाजे दुन्दुभि भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बेसुमार।।

५. प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन।
महामत इन प्रकास थें, अखण्ड किए सब जन।।

किरंतन-प्रकरण-५७

६५

राग श्री कटको

१. राजाने मलोरे राणें राए तणों, धरम जाता रे कोई दौड़ो।
जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो।।

२. छूटत है रे खरग छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन।
सत न छोड़ो रे सत वादियो, जो बढ़्यो तुरकान।।

३. त्रैलोकी में रे उत्तम खंड भरथ को, तामें उत्तम हिंदु धरम।
ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम।।

४. राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर।।

५. हरिद्वार ढहाए रे उठाए तपसी तीर्थ, गौवध कैयों विघन।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर,पर कमर न बांधी रे किन।

६. बात ने सुनी रे बुन्देले छत्रसाल ने,आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के,सांइए किया सैन्यापति सिरदार।।

७. प्रगटे निसान रे धूमरकेतु खय मास,पर सुध न करे अजूं कोई इत।
बेगेने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहे महामत।।

किरंतन-प्रकरण-५८

६६

राग श्री गौड़ी

१. कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम।
खेल किया तुमारी खातिर, सुनियो हो सृष्ट ब्रह्म।।

२. सत ढांप्या पीठ देवाई पिया को, झूठ ल्याया नजर।
नेहेचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो घर।।

३. नेहेचल घर थें आइयां खेल देखने, सत सरूप परवान।
सो अंकूरी भूले क्यों यामें, जाए दई पिउ पेहेचान।

४. ग्रास किए त्रिगुन त्रैलोकी, ऐसो मोह अंध अहंकार।
सुध न होवे काहूं धाम धनी की, पोहोंचने न देवे पुकार।।

५. पोहोंचे नहीं कल बल कुली को, कोई मिने चौदे भवन।
ऐसो महाबली ताए उड़ावें, बुधजी एकै खिन।।

६. पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम।
कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्ट के, मिले नूर बुध हुकम।।

७. उदयो अखण्ड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट।
कहे महामत रात टली सबन को, आए सब धनी की ओट ।।

किरंतन-प्रकरण-६०

६७

राग श्री नट

१. साहेब तेरी साहेबी भारी।
कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी।।

२. रूह अल्ला किल्ली अल्लाह थें, ले उतरे चौथे आसमान।
सो हम मांहें बैठ के, खोले कुलफ कुरान ।।

३. कई किताबें कई कलमें, कई जो नामें और।
जो कोई कहावे बुजरक, सब आए मिले इन ठौर।।

४. त्रैलोकी तिमर नसाइयो, कर रोसन अति जहूर।
चौदे लोक चारों तरफों, बरस्या खुदा का नूर।।

५. काटे करम सबन के, काल मार किया दुख दूर।
हिरदे माहें नूर के, लिए नजर तले हजूर।।

६. नूर अछर की नजरों, कई कोट ऐसे इंड।
त्रिगुन त्रैलोकी पल में, कई उपज फना ब्रह्मांड।।

७. ऐसी बड़ाई कई सिर मेरे, दे दे लई जो दाब।
सब दुनियां के दिल में आनी, दे साहेदी सब किताब।।

किरंतन-प्रकरण-६१

६८

राग श्री नट

१. साहेब तेरी साहेबी भारी।
कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी।।

२. रूह अल्ला किल्ली अल्लाह थें, ले उतरे चौथे आसमान।
सो हम मांहें बैठ के, खोले कुलफ कुरान।।

३. मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक।।

४. भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार।
दुनियां उठाई पाक कर, ना जरा रह्या विकार।।

५. रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए।
भई दुनियां साफ मुसाफ से, मुझसे कजा कराए।।

किरंतन-प्रकरण-६१

९९

राग श्री

१. मांगत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन।
ए जिन तुम खाली करो, मैं अर्ज करूं दुलहिन।।

२. मेरे धनी तुमारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप।
इस्क दीजे मोहे अपनो, मैं तासों करूं मिलाप।।

३. ना चाहों मैं बुजरकी, ना चाहों खिताब खुदाए।
इस्क दीजे मोहे अपना, मोहे याही सों मुद्दाए।।

४. इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर।
एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुख का नूर।।

५. जिन दयाएं परदा उड़ाइया, मैं फेर फेर मांगों सो मेहेर।
इस्क दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरकी जेहेर।।

६. मोहे सेवा प्यारी पिउ की, साहेब हो बैठो तुम।
अति सुख पाऊं इनमें, करों बंदगी खसम।।

७. तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात।
इस्क सों सेवा करूं, सब अंगों साख्यात।।

८. प्रेम दरद इस्क तुमारा, मैं फेर फेर मांगूं फेर।
प्यारें मिलूं प्यारे पिउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर।।

किरंतन-प्रकरण-६२

१००

राग श्री

१. जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात।
सो काहे को गिनावे आप साथ में, जिन सुध ना सुपन साख्यात।।

२. ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुनें पुकार।
ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊंट कतार।।

३. दुध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फैन।
दौड़ करें पड़े खैंच में, ए भी लगे दुख देन।।

४. सनमुख होए सेवा करें, मुख बोलत मीठे बैन।
तित भी खैंच ऐसी भई, ए भी लगे दुख देन।।

५. तारतम सब समझहीं, धाम सैयां हम बेहेन।
तित भी क्रोध छूटा नहीं, ए भी लगे दुख देन।।

६. मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन।
इंद्रावती तो केहेवहीं, जो दोऊ विध करी चेतन।।

किरंतन-प्रकरण-६३

१०१

राग श्री

१. ए माया आद अनादकी, चली जात अंधेर।
निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत है फेर।।

२. ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम।
ना सुध ठौर नेहेचल की, और ना सुध सरूप ब्रह्म।।

३. सुध नाहीं निराकार की, और सुध नाहीं सुंन।
सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन।।

४. ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन।
ना सुध मोह तत्व की, जिनथें अहं उतपन।।

५. सास्त्रों जीव अमर कहयो, और प्रले चौदे भवन।
और प्रले पांचों तत्व, और प्रले कहे त्रिगुन।।

६. ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब।।

७. महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महमंद के वचन।।

किरंतन-प्रकरण-६५

१०२

राग श्री आसावरी

१. लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान।।

२. सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार।
साथ सेवक मलायक, पावे दुनियां सब दीदार।।

३. मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूं होए।
बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए।।

४. मोमिन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इस्कै के भीगल।।

५. लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब।
बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब।।

६. खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और ना किनहूं होए।
करें बयान फुरमावें हुकम, लायक पूजने के सोए।।

७. सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर।
कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर।।

किरंतन-प्रकरण-७१

१०३

१. जंजीरां मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब।
जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब।।

२. देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिऐं खोले द्वार।
सब सिफत खास गिरोह की, लिखी बिध बिध बेसुमार।।

३. कलाम अल्ला की इसारतें, खोल दैयां खसम।
महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी ईसे के इलम।।

४. ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।
कई बिध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान।।

५. कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर।
सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर।।

किरंतन-प्रकरण-७२

१०४

राग श्री साखी

१. मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर ना सकी पेहेचान।
सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान।।

२. सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे।।

३. जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन।।

४. जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊं जार बार।
कोई बिध करके उड़ाइए, ए जो लाग्यो देह विकार।।

५. आग इस्क ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट।
खाक हुआ जल बल के, उड़ गया सब ठाट।।

६. महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाहया दिल।
हांसी करी भली भांत सों, अब उठो सुख लीजे मिल।।

किरंतन-प्रकरण-७५

१०५

राग श्री

१. निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत।।

२. हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम।
नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन।।

३. तुम निरखो सत सरूप, सत स्यामाजी रूप अनूप।
साजो री सत सिनगार, विलसो संग सत भरतार।।

४. सत सांई सों करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस।
ज्यों ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों त्यों छूटे असत दुख।।

५. जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे ना पिंड ब्रह्मांड।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम।।

६. महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ।
धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन।।

किरंतन-प्रकरण-७६

१०६

राग श्री

१. वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान।
धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान।।

२. ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन।।

३. धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर।
सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर।।

४. माहों माहें कई प्रीत रीतसों, खेलें हंसें रस रंग।
पेहेचान जिनों को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग।।

५. सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे।
तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखे।।

६. देख के अवसर भूलहीं, बहोरि न आवे ए अवसर।
जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर।।

७. महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया।।

किरंतन-प्रकरण-७७

१०७

राग श्री

१. सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।।

२. कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान।
सों जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान।।

३. एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़।।

४. इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसों भई ना रंग रस।।

५. सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी कहे धंन धंन।
साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन।।

६. महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल।
जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल।।

किरंतन-प्रकरण-७८

१०८

राग श्री मारू

१. साथजी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर।।

२. त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध माहें।
कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी तांहें।।

३. ब्रह्मसृष्टी आई अर्स से, जीत इंद्री सुध अंग।
छोड़ मांहें बाहेर दृष्ट अंतर, परआतम धनी संग।।

४. वतन के अंकूर बिना, इत दुनी करे कई बल।
मुक्त सुख इत होएसी, पर पावे न धाम नेहेचल।।

५. कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर।।

६. महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे ना अमल।।

किरंतन-प्रकरण-७९

१०६

राग श्री

१. मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम।
प्रेमैं में मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम।।
सखी री धाम जईए ।।टेका।।

२. दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर।
फुरमान में फुरमाइया, आया सो आखिर।।

३. स्याम स्यामा जी सुन्दर, देखो करके उलास।
मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास।।

४. मंगल गाइए दुलहे के, आयो समें स्यामा वर स्याम।
नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम।।

५. दरदी विरहा के भीगल, जानों दूरथें आए विदेसी।
घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी।।

६. उठके नहाइए जमुना जी, कीजे सकल सिनगार।
साथ सनमंधी मिल के, खेलिए संग भरतार।।

७. महामत कहे मलपतियां, आओ निज वतन।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन।।
किरंतन-प्रकरण-८०

११०

राग मारू

१. सुन्दर साथ जी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएँ किए अलेखे ।।टेका।।

क्यों ए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए।
अरस-परस यों भई बज्र में, सो मेरे धनिएं दई छुटकाए।।

२. कोई ना निकस्या इन माया से, अव्वल सेती आज दिन।
सो धनिएं बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन।।

३. धनिएं भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे।।

४. अवगुन अलेखें हम किए पिउसों, तापर ऐसे धनी के गुन।
कई विध सुख ऐसे धनीय के, क्यों कर कहूं जुबां इन।।

५. इन विध सुख दिए अलेखें, ऐसे गुन मेरे पिउ।
तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जिउ।।

६. महामत कहे गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए।।
किरंतन-प्रकरण-८१

१११

राग श्री

१. सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे।
अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे।।

२. न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरे पार।
इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नाहीं सुमार।।

३. मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इस्क।
ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक।।

४. क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक।

५. जो जागो सो देखियो, ए लीला सब्दातीत।
मेहेरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत।।

६. हुकम सरत इत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान।
महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान।।

किरंतन-प्रकरण-८२

११२

राग श्री

१. धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो ।।टेक।।
अखंड में याद देने, ए जो बैन बजायो।
चित दे साथ को ले, आप में समायो।।

२. बढ़त बढ़त प्रीत, जाए लई धाम की रीत।
इन विध हुई है इत, साथ की जीत।।

३. छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार।
परआतम अन्तस्करन उपज्यों, खेले संग आधार।।

४. दुलहे ने दिल हाल दे, खैंच लिए दिल सारे।
कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे।।

५. मद चढ्यो महामत भई, देखो ए मस्ताई।
धाम स्याम स्यामाजी साथ, नख सिख रहे भराई।।

६. पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बंधन नेम।
उठ बैठे मांहें धाम, हंस पूछे कुसल खेम।।

७. महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद।।

किरंतन-प्रकरण-८३

११३

राग श्री धना श्री

१. धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पियाजी सो हुओ रे मिलन।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान।।
२. धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धंन धंन धनी नेत्र मिलाए रसाले।
धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन चित चुभायो अन्दर।।
३. धंन धंन मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोको कंठ लगाई।
धंन धंन सखी मेरे सोई सायत, धंन धंन विलसी मैं पिउसों आयत।।
४. धंन धंन सखी मेरी सेज रस भरी, धंन धंन विलास मैं कई विध करी।
धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग, धंन धंन सखी मैं किए स्याम संग।।
५. धंन धंन सखी मेरे मंदिर सोभित, धंन धंन सरूप सुन्दर प्रेम प्रीत।
धंन धंन चौक चबूतरे सुन्दर, धंन धंन मोहोल झरोखे अन्दर।।
६. धंन धंन सखी मेरे भयो उछरंग, धंन धंन सखियों को बाढ्यो रस रंग।
धंन धंन सखी मैं जोवन मदमाती, धंन धंन धाम धनी सों रंग राती।।
७. धंन धंन नूर सबमें रह्यो भराई, देखे आतम सो मुख कह्यो न जाई।
धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामत।।

किरंतन-प्रकरण-८४

११४

राग श्री

१. ए जो कही जागन, सखी री जाग चलो ।।टेक।।
वचन नीके विचारियो, जो कोई सोहागिन।
जाग चलो पिउसों मिलो, सुख अखण्ड आनन्द अति घन ।।
२. जाग्रत सब्द धनीय के, ततखिन करें मकसूद।
सोई सब्द लिए बिना, होए जात नाबूद।।
३. मैं बिध बिध करके वचनों, मारे तरवारों घाए।
टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उड़त नहीं अरवाहे।।
४. अब तो आतम ने ए दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इस्क।
जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक।।
५. अब दौड़े जोस इस्क को, याद कर साथ धनी धाम।
ए धनी बिना न आवहीं, जोस इस्क प्रेम काम।।
६. हँसें खेलें बिध तीनमें, छोड़े देह सुपन।
महामत कहे सुख चैन में, धनी साथ मिलन।।

किरंतन-प्रकरण-८५

११५

राग श्री

१. साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।।

२. धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद।।

३. अब हुकम धनीय के, सब बिध दई पोहोंचाए।
चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए।।

४. कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन।।

५. सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ भरे आगे सोए।।

६. यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़।।

७. महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन।।

किरंतन-प्रकरण-८६

११६

राग श्री

१. आग परो तिन कायरों, जो धाम की राह न लेत।
सरफा करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत।।

२. पाइयत झूठ के बदले, सत सुख अखंड।
सो देख पीछे क्यों होवहीं, करते कुरबानी पिंड।।

३. कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर।
एक धनी नजर में लेय के, उड़ाए दे सरीर।।

४. इन विध कहे संसार में, धनी रंचक दिलासा दे।
टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसिक के।।

५. पूछ नीके अपने धनी को, भी नीके देख तारतम।
नीके देख फुरमान को, भी पूछ नीके आतम।।

६. महामत कहे पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे।।

किरंतन-प्रकरण-८७

११७

राग वसंत

१. चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामा जी स्याम।।

२. मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और।।

३. रेत सेत जमुना जी तलाव, कई ठौर बन करें विलास।
इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हांस।।

४. साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप।
भूलियां धाम धनी के वचन, न कछू सुध रही जो आप।।

५. अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेनु समान।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान।।

६. इत खिनका है जो लटका, जीत चलो भांवें हार।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार।।

किरंतन-प्रकरण-८९

११८

राग मारू

१. साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम।
वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम।।

२. लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन।
अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन।।

३. करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए।
करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए।।

४. कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग।।

५. मोमिन बड़ा मरातबा, सो अब होसी जाहेर।
छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर।।

६. जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान।।

७. सूरातन सखियन का, मुख थें कहयो न जाए।
महातम कहे सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए।।

किरंतन-प्रकरण-९०

११६

राग श्री

१. आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन।।

२. जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट।।

३. इन खसम के नाम पर, कई कोट बेर वारों तन।
टूक टूक कर डार हूँ, कर मन वाचा करमन।।

४. मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक।।

५. न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद।।

६. रोम रोम बीच रमि रह्या, पिउ आसिक के अंग।
इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग।।

७. महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।।

किरंतन-प्रकरण-९१

१२०

राग श्री

१. अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार।
एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार।।

२. साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान।।

३. देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ।
अवसर नया उदे हुआ, उमंगियों सब साथ।।

४. कई हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन।
तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे न सकें एक खिन।।

५. कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम मांहें।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नांहें।।

६. कहे महामत परीछा तिनकी, जो पेहेले हुए निरमल।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल।।

किरंतन-प्रकरण-९२

१२१

राग श्री

१. अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए।।

२. सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार।।

३. हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो।।

४. अब हम रह्यो न जावहीं, मूल मिलावे बिन।
हिरदे चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन।।

५. बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे।
सो तबहीं ततखिन में, पिउजी पे पोहोंचाए।।

६. याद करो जो मांगिया, धनिएं खेल देखाया कर हेत।
महामत कहें मेहेबूब के, सुख में हो सावचेत।।

किरंतन-प्रकरण-९३

१२२

राग श्री गौड़ी

१. सुनों साथजी सिरदारो, ए कीजो वचन विचार।
देखो बाहेर माहें अंतर, लीजो सार को सार जो सार।।

२. दरदी जाने दिल की, जाहेरी जाने भेख।
अंतर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख।।

३. मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात।
ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात।।

४. मैं इन सुख दुख थें ना डरूं, मेरे धनी चाहिए सनमुख।
मोहे एही कसाला होत है, जब कोई देत साथ को दुख।।

५. मेरी एक दृष्ट धनीय में, दूजी साथ के माहें।
तो दुख आवे मोहे साथ को, ना तो दुख मोहे कहूं नाहें।।

६. अब बोहोत कहूं मैं केता, करी है इसारत।
दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत।।

किरंतन-प्रकरण-९४

१२३

राग श्री गौड़ी

१. दरदी जाने दिल की, जाहेरी जाने भेख।
अंतर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला देख।।
२. मूल न लेवें माएना, लेत उपली देखा देख।
असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख।।
३. मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात।
ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात।।
४. अब बोहोत कहूँ मैं केता, करी है इसारत।
दिल आवे तो लीजो सलूक, सुख पाए कहे महामत।।

किरंतन-प्रकरण-६४

१२४

राग श्री

१. सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन।
तोल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन।।
२. साथ माहें सैयां धाम की, ईमान वाली सिरदार।
सो धन धाम का तौलसी, करसी दृढ़ निरधार।।
३. इस्क ईमान धनी धाम को, और जोस जाग्रत पेहेचान।
तौलें धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान।।
४. इत परीछा प्रगट, उठावें अपना भार।
बोझ निबाहें साथ को, और बोझ मसनंद भरतार।।
५. ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए।
और स्वांत सबूरी बिना, कबहूं न पावे कोए।।
६. ए लसकर सारा दिल का, सो दिलबरी सब चाहे।
दिल अपना दे उनका लीजिए, इन विध चरनों पोहोंचाए।।
७. ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार।।

किरंतन-प्रकरण-६५

१२५

राग श्री

१. तो भी घाव न लग्या रे कलेजे,
ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा,
सो चाहे हमारा दरसन।।

२. मोहे भेजी धनीने, तुमको बुलावन।
साथ जी मिलके चलिए, जाइए अपने वतन।

३. हम ब्रह्मसृष्ट आई धाम से, अछर खेल देखन।
खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन।।

४. साहेब तो पूरा मिल्या, तब थी मैं लड़कपन।
पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन।।

५. जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछू सुनिया कान।
सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान।।

६. महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप।
आखिर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी आप।।
किरंतन-प्रकरण-६६

१२६

राग श्री

१. इन धनी के बान मोको ना लगे,
मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम।
तो भी इस्क न आया मोको,
ए कैसा हुआ जुलम।।

२. रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ।
सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ।।

३. सो भी पिउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड।
मेरे तो जिउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखण्ड।।

४. तो भी प्रेम न उपज्या, धनी कर कर थके सनेह।
ढीठ निपट निठुर भई, धनी क्योंए न सके ले।।

५. आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत।
सो रोवत हों अंदर, फेर फेर जीव बिलखत।।

६. मेहेबूब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई।
महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा माहें ना मुई।।
किरंतन-प्रकरण-६७

१२७

राग श्री

१. धिक धिक पड़ो मेरी बुध को।
मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।।

२. मूल वतन धनिएं बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।।

३. अंखड सुख छोड्या अपना, जो मेरा मूल मुकाम।
इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम।।

४. पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान।।

५. बोहोत कह्या घर चलते, वचन न लागे अंग।
इंद्रावती हिरदे कठिन भई, चली ना पिउजी के संग।।

६. तब हार के धनिएं विचारिया, क्यों छोडूं अपनी अरधंग।
फेर बैठे मांहें आसन कर, महामति हिरदे अपंग।।

किरंतन-प्रकरण-६६

१२८

राग श्री

१. धिक धिक पड़ो मेरी बुध को।
मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।।

२. मूल वतन धनिएं बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।।

३. सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़या विसराम।।

४. खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम।
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम।।

५. अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम।
इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम।।

६. पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान।।

किरंतन-प्रकरण-६६

१२९

राग श्री

१. धनी एते गुन तेरे देख के, क्यों भई हिरदे की अंध।
कई साखें साहेदियां ले ले, याही में रही फंद।।

२. जो कोई कबीला पार का, सो सारों ने दई साख।
धनी गुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख।।

३. कई साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूं मैं अब।।

४. ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए विघन।।

५. गुन धनी के गाते गाते, गई सारी आरबल।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई न सकी चल।।

६. अब हुकम होए धनी सो करूं,मेरा बल न चले कछू इत।
सुरखरू तुम करोगे, पुकार कहे महामत।।

किरंतन-प्रकरण-१००

१३०

राग श्री

१. साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी ना कोई दुष्ट।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट।।

२. प्रेम खोया मैं बानी कर कर, हो गया जीव कोई भिष्ट।
साथ के चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट।।

३. अनेक अवगुन किए मैं साथ सों, सो ए प्रकासूं सब।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब।।

४. दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई।।

५. इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।।

६. सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांउं लागी।।

किरंतन-प्रकरण-१०१

१३१

राग श्री

१. बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।।

२. जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार।
कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार।।

३. इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे।
सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे।।

४. खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती।
बिना इस्क जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती।।

५. जो कोई मारे इन दुस्मन को, करे सब दुनियां को आसान।
पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान।।

किरंतन-प्रकरण-१०२

१३२

राग श्री

१. कयामत आई रे साथजी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों न देखो मेरे भाई।।

२. कागद आया वतन का, कासद होए ल्याए फुरमान।
आया खातिर अपने, देने को ईमान।।

३. जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान।
सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान।।

४. और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब।
सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब।।

५. ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।।

६. साथजी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत।
चे सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत।।

किरंतन-प्रकरण-१०४

१३३

राग श्री

१. ए सुच कैसे होवहीं, तुम देखो याकी विध।
अनेक आचार कर कर थके, पर हुआ न कोई सुध।।
२. निस दिन ग्रहिए प्रेम सों, जुगल सरूप के चरन।
निरमल होना याही सों, और धाम बरनन।।
३. इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाय कोई नाहें।
भजन बिना सब नरक है, पच पच मारिए माहें।।
४. ए नरक निरमल क्यों होवहीं, जो ऊपर से अंग धोए।
अंग धोए मन निरमल, कबहूं न हुआ कोए।।
५. नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन।
ए तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन।।
६. आतम धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए।
महामत कहे समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमें पाए।।

किरंतन-प्रकरण-१०६

१३४

राग श्री

१. कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं।
सब सिनगार को सोभा देवै, मेरा दिल बांध्या तुझसों।।
२. तूं नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे।।
३. कामरी पेहेरी बृजवधू, और सुन्दरवर स्याम।
भी पेहेरी मंहमद ने, और पेहेरी इमाम।।
४. मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए।
मोमिन कहे सो लेवहीं, जो रूह अर्स की होए।।
५. रूह अल्ला पेहेरी अंदर, हुई नहीं जाहेर।
दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर।।
६. पट पेहेर खाए चीकना, हेंम जवेर सिनगार।
हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार।।
७. हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम।
महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम।।

किरंतन-प्रकरण-११०

१३५

राग श्री

१. फरेबी लिए जाए, मेरी रूह तूं आँखें खोल।
बीच बका के बैठके, तें किनसों किया कौल।।

२. अर्स की खिलवतमें, हककी वाहेदत।
बैठके बातें जो करी, सो कहां गई मारफत।।

३. उतरते अरवाहों सों, कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम।
मैं लिखूंगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम।।

४. कौन है तेरा मासूक, किनसों है निसबत।
देख अपना वतन, अब तूं आई कित।।

५. मूल मिलावा खिलवत का, अजूं न आवे याद।
ए झूठी जिमी जो दोजख, इत कहा लग्यो तोहे स्वाद।।

६. महामत कहें ए मोमिनों, ऐसी क्यों चाहिए रूहन।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अर्स जिनों वतन।।

किरंतन-प्रकरण-१११

१३६

राग श्री

१. सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल,
रूह देख नैना खोल नूर जमाल।
फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे,
किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल।

२. जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगतें,
चार हारों करी अंबर झलकार।
जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों,
मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार।।

३. लाल अधुर हंसत मुख हरवटी,
नासिका तिलक निलवट भौंहे केस।
श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना,
ए देख दरसन आवे जोस आवेस।।

४. बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक,
पोहोंची कांड़ों कड़ी हस्त कमल मुंदरी।
नख का नूर चीर चढ़या आसमान में,
ज्यों हक चलवन करे सब अंगुरी।।

५. रोसनी पटुके करी अवकास में,
चरन भूखन जामें इजार झांई।
कहे महामती मोमिन रूह दिल को,
मासूक खैंचें तोहे अर्स मांही।।

१३७

१. नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर।

२. नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगों उद्दोत नूर पूर।।

३. नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार।
नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिये हार नूर गंज अंबार।।

४. नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर।
सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर।।

किरंतन-प्रकरण-११४

१३८

राग श्री

१. मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत।
ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत।।

२. मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल।
सो अरवा नहीं अर्स की, ना तिन सिर नूर जमाल।।

३. जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस।।

४. महामत कहें ए मोमिनों, ए है अपनी गत।
झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमिन अर्स वाहेदत।।

५. इन महमंद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।।

किरंतन-प्रकरण-११८

१३९

राग श्री परज

१. वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी।।

२. सुन्दर सरूप स्याम स्यामा जी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।।

३. इन जेहेर जिमी से कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी।।

४. कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी।।

५. सुन्दर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी जी कायम सुखकारी।।

किरंतन-प्रकरण-११९

१४०

राग मारू

१. साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार ।।टेक।।
कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक खुआर।
अनेक पख देखाए तुम को, छोड़ाए के प्रवार।।

२. कुटम कबीले मांहें अपने, बैठे हते करार।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार।।

३. सुख सीतल सों अपने घर में, कई भांतों करते प्यार।
सो सारे कर दिए दुस्मन, जासों निस दिन करते विहार।।

४. ऐसे सुख कहूं मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सब्द दोए चार।।

५. यों कई छल मूल कहूं मैं केते, मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक न रहे खुमार।।

किरंतन-प्रकरण-१२०

१४१

राग चरचरी छंद

१. स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग।
करती पूरन रंग, परआतम परे।।

२. अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग।
अलबेली अति अभंग, भामनी रस भरे।।

३. छटके छेल कंठ मेल, हाँस खेल रंग रेल।
बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केलि करे।।

४. कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार।
संग आधार करे विहार, महामती काज सरे।।

किरंतन-प्रकरण-१२३

१४२

राग श्री कालेरो

१. हम चडी सखी संग रे,
रूड़ा राज सों राखो रंग, सखी रे हमचडी ।।टेक।।
सतगुर मारो श्री वालोजी, तेह तणें पाए लागूं।
मूल सगाई जांणी मारा वाला, अखंड सुखडा मांगूं।।

२. आंकडियो माहें छे विस्मी, झीणी गूंथण जाली।
जेनो कागल जे पर हुतो, तेणे घूंटी सर्वे टाली।।

३. तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्वने जाण।
सखियो कहे अमें आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण।।

४. सखियो सर्वे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले।
आ लीला केम छानी रेहेसे, सखियो मली सहू टोले।।

५. पेहेली वृंदावन मां रामत, वली ते आंहीं उतपन।
आ लीलाओने प्रगट करसे, सुकजी तणें वचन।।

६. वृज रास आंही तेहज लीला, ते वालो ते दिन।
तेह घड़ी ने तेहज पल, वैराट थासे धंन धंन।।

७. श्री श्री जी ने चरण पसाए, जसिया हमची गाए।
थोडा दिनमां चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए।।

किरंतन-प्रकरण-१२४

१४३

राग मारू

१. वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार।।

२. सत वोहोरीने सत ग्रहजो, राखजो रूडी प्रकार।
आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार।।

३. अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार।
लाख चोरासी भमीने आव्या, आहीं मध्य देस वेपार।।

४. एणी बाजारे कूड कपट, छल छे भेद अपार।
चौद भवन नी खरीद आंहीनूं, माहें कोई कोई छे साहूकार।।

५. खोटा साटे साचू जड़े छे, एवी मली छे बाजार।
लाभ अलेखे आ फेरा तणो, जो राखी सको वेहेवार।।

६. दुखने साटे अखंड सुख आवे, अधखिण माहें आज।
साहुकारो साधो वेहेवारियो, एम सुणो कहे मेहेराज।।

किरंतन-प्रकरण-१२५

१४४

राग धना श्री

१. धोरीडा मा मूके तारी धूसरी
वाटडी विस्मी गाड़ी भार भरी,
धोरीडा मा मूके तारी धूसरी ।।टेक।।
धोरीडा आरे मारे रे, हांरे तूंने गोधे घणे रे।
तूं तां नाके नथाणों रे, तूं तां बंध बंधाणो गुण आपणे रे।।

२. धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय रे।
कल ने वेलूं रे धोरी, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाय रे।।

३. धोरीडा घणूं दोहेलूं छे रे, कीधां भोगवे रे।
तारे कांधे चांदी रे, दुखड़ा सहे रे।।

४. धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडा द्रोड तूं आवे।
दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे।।

५. धोरीडा वही ने छूटे रे, करम आपणां रे।
मेहेराज कहे एम, कीधा छे घणा रे।।

किरंतन-प्रकरण-१३०

१४५

१. अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार।।
२. कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल।
तोलो ना पिउ पाइए, जोलों ना साधे दिल।।
३. अहनिस तूं भेली रहे, अपने पिउ के संग।
पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग।।
४. जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल।
तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, माहें रहे हिल मिल।।
५. तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझ से दूर।
परदा तू हीं करत है, अंतर न आड़े नूर।।
किरंतन-प्रकरण-१३२

१४६

१. केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार।
मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार।।
२. फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक।।
३. मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूहअल्ला मिले मुझ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ।।
४. सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को।
विचार देखो हादीय की, वानी ले दिलमों।।
५. कह्या उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रब-कुंम।
फेर कह्या अरवाहों ने, वले न भूलें हम।।
६. महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के।
हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते।।
खुलासा-प्रकरण-१६

१४७

राग श्री

१. ऐसा खेल देखाइया, जो मांग लिया है हम।
अब कैसे अर्ज करूं, कहोगे मांग्या तुम।।

२. कछु आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए।
ऐसी जुदागी कर दई, कछू कह्यो सुन्यो न जाए।।

३. सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड़।
जानों सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड़।।

४. धनी मैं तो सूती नींद में, तुम बैठे हो जाग्रत।
खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछु ना चलत।।

५. हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम।
होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।।

६. अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रह्या न हमपना हम।
इन झूठी जिमी में बैठके, कहा कहूं तुमें खसम।।

७. महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल।।

खिलवत-प्रकरण-१

१४८

१. ना कछू देखूं दरसन, ना कछू केहेने की आस।
ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास।।

२. धनी एती भी आसा ना रही, जो करूं तुमसों बात।
ना बात तुमारी सुन सकों, ना देखूं तुमें साख्यात।।

३. एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए।
लगाव न रह्यो एक रंचक, ताथें मेरो कछू न बसाए।।

४. कहा करूं किन सों कहूं, ना जागा कित जाऊं।
एता भी तुम दृढ़ कर दिया, तुम बिना ना कित ठांऊ।।

५. ना कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पिउ चरन।
पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन।।

६. महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल।।

खिलवत-प्रकरण-१

१४६

१. मैं बिन मैं मरे नही, मैं सों मारना मैं।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे।।

२. अब मैं मरत है इन विध, और न कोई उपाए।
खुदाई इलम सों मारिए, जो हकें दिया बताए।।

३. जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं।
समझे थें मैं उड़ गई, सब कछू हुआ तुम से।।

४. चौथे आसमान लाहूत में, रूह अल्ला बसत।
पेहेले बताई फुरकानें, सो मोमिन भेद जानत।।

५. तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल-असल।।

६. महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से।।

खिलवत-प्रकरण-३

१५०

१. ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे।।

२. कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुमहीं हक जानत।।

३. मैं बीच फरामोसी के, तुम आए सूरत बदल।
पेहेचान क्यों कर सकूं, इन वजूद की अकल।।

४. जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर।
या पाक करो हादीपना, या बैठाओ माहें तकसीर।।

५. आप भी भेख बदल के, आए अपना दिया इलम।
सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान ना सकें हम।।

६. महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम।

खिलवत-प्रकरण-४

१५१

१. हक की बातें अनेक हैं, कही ना जाए या मुख।
इन झूठे खेल में बैठाए के, कई दिए कायम सुख।।
२. मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब।
पर एक फैल रेहेनीय का, लिया न सिर पर तब।।
३. अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अर्स नजर।।
४. अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल को चाहे।
जो होवे असल अर्स की, सो फैल ले हाल देखाए।।
५. केहेनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज।
हक अर्स नजर में लेय के, उड़ाए देओ दुनी बोझ।।

खिलवत-प्रकरण-५

१५२

१. गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत।।
२. न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर के माहें।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें।।
३. रूह-अल्ला आए अर्स से, मुझसों किया मिलाप।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप।।
४. बादल बरस्या रूह-अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन।
और कोई न ले सके, बिना अर्स रूहन।।
५. इस्क न आवे पेहेचान बिना, सो मोको दई पेहेचान।
दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान।।
६. महामत कहे ए मोमिनों, हक साहेबी बुजरक।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क।।

खिलवत-प्रकरण-६

१५३

१. ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक।
मेहेर करी मुझ ऊपर, ए इलम खुदाई बेसक।।
२. कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सो जब।
हक इलम से देखिए, सोई साइत हैं अब।।
३. रूह अल्ला आए अर्स से, मुझ सों किया मिलाप।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप।।
४. ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन।
या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूँ आगे मोमिन।।
५. ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान।
बाले थें बुड़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान।।
खिलवत-प्रकरण-६

१५४

१. साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए।।
२. नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब।
हिसाब न तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब।।
३. कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान।।
४. रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल।
मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल।।
५. कई विध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान।।
६. केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर।।
खिलवत-प्रकरण-८

१५५

१. देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल।
तैं तेरे कानों सुनें, हक बका के बोल।।

२. कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन।।

३. कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर।
तो तोहे याद न आवहीं, जो तैं सुन्या नहीं दिल धर।।

४. सहूर तोको साहेब दिया, इलम दिया हक।
बाहेर मांहें अंतर, एक जरा न रही सक।।

५. अर्स-अजीम तेरा वतन, खसम नूर-जमाल।
ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल।।

६. ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इस्क असल।
तो बुजरक इस्क अपना, रब्द किया सबों मिल।।

७. अनहोनी ए हकें करी, करके ऐसी फिकर।
परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर।।

८. महामत कहे मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम।।

खिलवत-प्रकरण-६

१५६

१. बीच अर्स खिलवत में, होत दायम विवाद।
इस्क अपना रूहें हक को, फेर फेर देती याद।।

२. तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक।
ए तेहेकीक तुम जानियो, इस्क मेरा बुजरक।।

३. तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक।
हक का इस्क हमसे बड़ा, ए क्यों होवे मुतलक।।

४. हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इस्क।
हादी रूहों को अर्स में, ए सुध नहीं मुतलक।।

५. एक इस्क दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर।
तो हमेसा अर्स में, होता एह मजकूर।।

६. बहुत बातें हैं हक की, बीच अर्स खिलवत।
इन जुबां केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत।।

खिलवत-प्रकरण-६

१५७

१. हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इस्क।
हादी रूहों को अर्स में, ए सुध नहीं मुतलक।।
२. जो ए खबर होती तुमको, जैसी मेरी साहेबी बुजरक।
तो बड़ा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इस्क।।
३. अर्स न छूटे खिन एक, तो क्यों देखें मेरा इस्क।
तो क्यों पाइए इस्क बेवरा, आप अपने माफक।।
४. अर्स साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इस्क।
तो रूहों हक सों कह्या, इस्क अपना बुजरक।।
५. ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इस्क असल।
तो बुजरक इस्क अपना, रब्द किया सबों मिल।।
६. दायम बातें इस्क की, करत माहों-माहें प्यार।
खेलते हँसते रमते, करत बारंबार।।

खिलवत-प्रकरण-६

१५८

१. नूर-जमाल के दीदार को, आवें नूर-जलाल।
नूर-जमाल के अर्स में, इत रूहें रहें कमाल।।
२. इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार।
उतरे लैलत-कदर में, एह तीसरा तकरार।।
३. अर्स-अजीम तेरा वतन, खसम नूर-जमाल।
ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल।।
४. देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत।
देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत।।
५. जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन।
रूह-अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन।।

खिलवत-प्रकरण-६

१५६

१. रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहें।।

२. हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ।।

३. ए सब्द कहे तैं नींद में, के सुपने करत स्वाल।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल।।

४. अर्स की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या।।

५. खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे ना मुझ माहें।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें।।

६. महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रहया न और उदम।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम।।

खिलवत-प्रकरण-१०

१६०

१. उमर तो सब चल गई, आया उठने का दिन।
या तो उठाओ हँसते, ज्यों जानो त्यों करो रूहन।।

२. नींद आई हुकम सों, हुकमें हुआ सुपन।
हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन।।

३. हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें।।

४. ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत।
मुझ बिना किने ना पाइया, मेरी बेसक रूह जानत।।

५. या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक।
तिनों नीके कर चीन्ह्या, जिन बूझ लिया इस्क।।

खिलवत-प्रकरण-१०

१६१

१. ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन।
देख दिन में ल्यावें को, और रात में ल्यावें दिन।।

२. ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अर्स माहें।
रूह बकाएँ लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें।।

३. तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत।
कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत।।

४. ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान।।

५. दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन।
निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन।।

खिलवत-प्रकरण-१०

१६२

१. हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।।

२. खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख।
मैं देऊंगा सब साहेदियां, पर तुम छोड़ न सको दुख।।

३. तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम।
क्यों होसीं हम नादान, जो ऐसा करें जुलम।।

४. जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए।
सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए।।

५. हक कहे तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित।
मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत।।

६. आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार।।

खिलवत-प्रकरण-११

१६३

१. खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल।।

२. रूहें बड़ी रूह सों मिलके, बहस किया हकसों।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हममों।।

३. बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।।

४. फेर जवाब रूहन को, इन बिध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।।

५. ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क।।

खिलवत-प्रकरण-११

१६४

१. ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।।

२. रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर।
उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर।।

३. तुम बड़ा इस्क कह्या अपना, मेरा न आया नजर।
खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर।।

४. रूह अल्ला एता कहियो, तुम मांग्या सो फरामोस।
जब इस्क ज्यादा आवसी, तब आवसी माहें होस।।

५. बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अर्स में मिल।
एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल।।

६. महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल।।

खिलवत-प्रकरण-१३

१६५

१. मैं लाड़ किया रूहन सों, वास्ते इस्क इन।
क्यों ना लें मेरा इस्क, अंग असलू मेरे तन।।
२. तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर।
ए याद करो इन इस्क को, जो अपन करी मजकूर।।
३. जो रब्द किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन।
रात दिन ना पल घड़ी, सोई बात सोई खिन।।
४. नाम मेरा सुनते, और सुनत अपना वतन।
सुनत मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन।।
५. सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क।।
६. सांच झूठ में मिल गईयां, तुरत होसी तफावत।
करसी पल में बेसक, ऐसा इलम मेरी न्यामत।।

खिलवत-प्रकरण-१३

१६६

१. रूह अल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान।
पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान।।
२. अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब।।
३. ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए।
ओ तुमें ना चीन्ह हीं, ना तुमें ओ चिन्हाए।।
४. आंखां होसी खुलियां, मेरी बातां करो माहों-माहें।
ढूंढ़ोगे मांहे बाहेर, और पावे ना कोई क्याहें।।
५. सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना।
जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना।।
६. महामत कहे ए मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए।।

खिलवत-प्रकरण-१४

१६७

१. आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।।

२. इलम ले चलो अर्स का, खोल दयो हकीकत।
भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत।।

३. रेहे ना सकों मैं रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मुझ बिन।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहें ना बिछोहा खिन।।

४. खेल देखाऊं इन भांत का, जित झूठै में आराम।
झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम।।

५. हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान।।

६. एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात।।

७. महामत कहे ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी न जात।
बेसक देखो दिन बका, माहे मेयराज की रात।।

खिलवत-प्रकरण-१५

१६८

१. रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए।
तबहीं रूहों के दिल से, फरामोसी उड़ जाए।।

२. रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर।
जो रब्द किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर।।

३. मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख।
तब इनों तिलसम का, उड़ जासी सब दुख।।

४. बीच बका के बैठ के, हकें कह्या यों कर।
रूहअल्ला कहियो रूहन से, भूल गइयां हक घर।।

५. हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान।।

६. रब्द किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल।
अजूं याद दिए न आवहीं, सुन एती पुकार रसूल।।

खिलवत-प्रकरण-१५

१६९

१. एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर।
रब्द किया इस्क का, सबों आप अपना जहूर।।
२. रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम।
इस्क पूरा है हममें, ए नीके जानो तुम।।
३. बड़ी रूह कहे मुझ में, हक का पूरा इस्क।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक।।
४. तब हकें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक।
और आसिक बड़ी रूह का, कौन मेरे माफक।।
५. दूर कहूं न जाऊंगा, तुम बैठो पकड़ चरन।
खेल देखोगे इतही, तुम मिल सब मोमिन।।
खिलवत-प्रकरण-१६

१७०

१. अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद।।
२. ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग।
ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अति रंग।।
३. इस्क है हमारी निसानी, बिना इस्क दुलहा मैं रानी।
इस्क बिना मैं भई वीरानी, बिना इस्क न सकी पेहेचानी।।
४. धनीजी को इस्क भावे, बिना इस्क न कछू सोहावे।
यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इस्क बिन।।
५. इस्क आगूं न आवे माया, इस्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया।
इस्कें अर्स वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया।।
६. पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक।
जब आतम प्रेम सों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी।।
७. कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए।।
परिकरमा-प्रकरण-१

१७१

१. ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो।।टेक।।

२. सुपन बुध बैकुंठ लो, या निरंजन निराकार।
सो क्यों सून्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार।।

३. एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।
सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।।

४. अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।
मोह अंहकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

५. अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक।।

६. ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन।।

परिकरमा-प्रकरण-२

१७२

१. अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम।।

२. उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज चमके रेजा रेज।
ए जोत आसमान लों करत, जोत आसमान सामी लरत।।

३. केल लिबोई और अनार, और तीन बन दाहिनी किनार।
बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत केहेलाए।।

४. दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन।
नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई।।

५. प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयोंको भी पिलावती।
पियाजी कहे इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती।।

६. तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जानें धाम में पैठियां, ए तो घरही में जाग बैठियां।।

परिकरमा-प्रकरण-३

१७३

१. तुमको इस्क उपजावने, करूं सो अब उपाए।
पूर चलाऊं प्रेम को, ज्यों याही में छाक छकाए।।

२. इस्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस।।

३. निसदिन रंग-मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम।।

४. एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।
इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख।।

५. फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार।
फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार।।

६. मैं जो दई तुमें सिखापन, सो लीजो दिल दे।
महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए।।

परिकरमा-प्रकरण-४

१७४

१. सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूँ सोभा सोए।।

२. साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात।।

३. मंदिर दिवालें गलियां, नकस फल फूल पात।
मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात।।

४. कई छलकत जल चेहेबच्चों, करत झीलना जाए।
अतन्त खूबी इन बन की, क्यों कहूँ इन जुबांए।।

५. कई बन स्याह सुपेत हैं, कई बन हैं नीले।
कई बन लाल गुलाल हैं, कई बन है पीले।।

६. चढ़ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार।
इन समें बन सोभित, माहें बिजलियां चमकार।।

७. हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत।
अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत।।

८. महामत कहे ए मोमिनों, देखो ताल पाल के बन।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन।।

परिकरमा-प्रकरण-७

१७५

१. अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ।।

२. एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात।
गिरद दयोहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात।।

४. जो झुण्ड ताल की पाल पर, ऊंचा अतंत है सोए।
फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए।।

५. जब हक आवत ताल को, आए बिराजत इत।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक को बैठत।।

६. पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन बन छाहें।
तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए।।

७. पाल ऊपर जो दयोहरी, बीच कठेड़ा सबन।
ए बैठक सोभा लेत हैं, कहा कहूं जुबां इन।।

परिकरमा-प्रकरण-८

१७६

१. क्यों कहूँ इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल।
क्यों देऊँ निमूना इनका, याको रूहें जानें तौल मोल।।

२. क्यों कहूँ इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत।
आराम इन इस्क का, सोई जाने जो लेत।।

३. क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनों सों।
ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत है जिनकों।।

४. क्यों कहूं इन सुखकी, धनी देवें इस्कसों।
ए सोई रूहें जानही, हक देत हैं जिनकों।।

५. क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत।
जो ए प्याले लेत हैं, सोई जानें रस रीत।।

६. क्यों कहूं इन सुखकी, जाए हक लेत बोलाए।
सनमुख बातें करके, अमीरस नैन पिलाए।।

७. क्यों कहूं इन सुखकी, जाको निरखत धनी नजर।
प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर।।

परिक्रमा-प्रकरण-११

१७७

१. क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत।।

२. बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत।
न रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत।।

३. किन तरफ हमारे तुम हो, किन तरफ तुमारे हम।
बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम।।

४. पेहेले क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल।
पीछे ताला कुंजी दोऊ दिए, दई खोलने की कल।।

५. हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फुरमान में मारफत।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत।।

६. रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।
दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत।।

परिकरमा-प्रकरण-१८

१७८

१. भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद।
हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद।।

२. कहां सुख झरोखे अर्स के, कहां सुख सीतल बयार।
कहां सुख बन कहां खेलना, कहां सुख बखत मलार।।

३. क्यों दिन जावें एकले, किन विध जावे रात।
किन विध बसो तुम अर्स में, वह कहां गई मूल बात।।

४. चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत।
ए सुख अर्स के इन जिमी, हक हमको विध विध देत।।

५. सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात।
ए कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात।।

६. दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन।
सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन।।

परिकरमा-प्रकरण-१९

१७६

१. पहाड़ मानिक मोहोल कई, यों पहाड़ मोहोल अनेक।
सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लो कहूं विवेक।।

२. बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत।
एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हींचत।।

३. अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जुगत।
जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत।।

४. कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल।
सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल।।

५. ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात।
हक के साथ हम सब रूहें, हँस हँस करती बात।।

परिकरमा-प्रकरण-२४

१८०

१. सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले।।

२. और सुख पहाड़ ताल के, तीनों तरफों मोहोलात।
पहाड़ सुख मोहोल अंदर, जो कई नेहेरें चली जात।।

३. गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें चार।
चार चार हर एक में, उतरत सोले धार।।

४. कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहेरें चलें चक्राव।
बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे, कई जल उतरे तले तलाव।।

५. सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार।।

परिकरमा-प्रकरण-२६

१८१

१. खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग।
अर्स के जानवरों को, कायम है सोहाग।।
२. सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल।।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल।।
३. जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन।
याही अंग इस्क में, छोड़त नाहीं खिन।।
४. खावंद के दीदार को, पसु और जानवर।
आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर।।
५. किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए।
दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए।।
६. धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर।।
७. एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहें।
खेलें बोलें गाएं लरें, सो सब इस्क माहें।।

परिक्रमा-प्रकरण-२८

१८२

१. अस्वारी पसु पंखियन पर, धनी करत हैं जब।
जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब।।
२. घोड़े पर राखत हैं, आकास में उड़त।
कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत।।
३. जब अस्वारी साहेब करें, होवें बड़ीरूह रूहें अस्वार।
पसु पंखी सबे मिले, हर जातें फौंजें न पार।।
४. मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूरजलाल।
सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूरजमाल।।
५. सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल।
ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल।।
६. महामत साहेबी हककी, मैं खसम अंग का नूर।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर।।

परिकरमा-प्रकरण-२६

१८३

१. प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन।
प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन।।

२. सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास।
प्रेम बसत ब्रह्मसृष्ट में, जो खेले सरूप बृज रास।।

३. तो नवधा से न्यारा कह्या, चौदे भवन में नाहें।
सो प्रेम कहां से पाइए, जो रेहेत गोपिका माहें।।

४. क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी निरखत नैंन भर।
आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर।।

५. क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ की निरखें बंकी पाग।।
निसदिन नजर न छूटहीं, पिउसों करें रंग राग।।

६. महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए।।

परिकरमा-प्रकरण-३९

१८४

१. क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को लेवें माहें नैन।
न्यारे निमख न करें, निस-दिन एही सुख चैन।।

२. क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखें धनी के अंग।
पलक ना पीछी फेरत, आठों-जाम उछरंग।।

३. क्यों न होए प्रेम इनको, जाको देखें धनी नजर।
प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर।।

४. क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को रिझावत।।
आठों पोहोर सबों अंगों, अरस-परस रंग रमत।।

५. क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ को निरखें नीके कर।
आठों-पोहोर इनों पर, धनी की अमी नजर।।

६. महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए।।

परिक्रमा-प्रकरण-३९

१८५

१. एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए।।

२. एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए।
एक का कपड़ा धाए के पकड्या, खैंच चली चित्त चाहे।।

३. सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए।।

४. एक दौड़ियां जाए दई हाँसिए गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर।।

५. स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हँसकर।
खेलें महामति देखलावें इंद्रावती, खोले पट अन्तर।।

परिकरमा-प्रकरण-४०

१८६

१. भोम तले की क्यों कहूं, विस्तार बड़ो अतंत।
नेक निक निसान दिए हादियों, मैं करूं सोई सिफत।।

२. चौसठ थंभ चबूतरा, दरवाजे तखत बरनन।
रूह मोमिन होए सो देखियो, करके दिल रोसन।।

३. लग कठेड़े तकिए, क्यों कहूं तकियों रंग।
बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग।।

४. इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर।
वस्तर भूखन सिनगार, सुन्दर जोत अति जोर।।

५. एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन।
बल बल जाऊं मुखारबिंद की, और बलि बलि जाऊं चरन।

६. महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन।
ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन।।

सागर-प्रकरण-१

१८७

१. हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज।
बड़ी भई रदबदल, रूहें बड़ी रूह सों राज।।

२. देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन।
हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन।।

३. एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल।
क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल।।

४. ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग।।

५. जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर।।

६. महामत कहे बैठियां देख के, हक हँसत हैं हम पर।
कहे देखो इन विध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर।।

सागर-प्रकरण-२

१८८

१. इन बिध हक का इलम, हमको जगावत।
इलम किल्ली हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत।।

२. ना तो नींद उड़े पीछे सुपना, कबलों रेहेवे ए।
इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के।।

३. जो रूहें अर्स अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार।
ए बानी देख फजर की, सबे हूजो खबरदार।।

४. ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत।।

५. सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान।
ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान।।

सागर-प्रकरण-२

१८९

१. चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।।

२. महंमद पोहोंचे अर्स में, देखी हक सूरत।
हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत।।

३. देखी अमरद जुल्फें हक की, और बोहोत करी मजकूर।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर।।

४. मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन।।

५. लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर।
आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर।।

६. महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस।।

सागर-प्रकरण-५

१९०

१. बरनन करूं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इनका जहूर।।

२. प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली ताल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।।

३. इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन।।

४. प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन।।

५. ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन।
ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन।।

६. महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन।।

सागर-प्रकरण-६

१६१

१. ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन।
ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन।।
२. चित्त खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धंन धंन।
ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।।
३. ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन।
कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन।।
४. करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन।।
५. धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखूं निसदिन।
आठों जाम चौंसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन।।

सागर-प्रकरण-६

१६२

१. अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान।
किया चाह्या सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान।।
२. ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख।।
३. जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत।
सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत।।
४. एते दिन ढ़ांपे रहे, किन कही ना हकीकत।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत।।
५. महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन।।

सागर-प्रकरण-६

१६३

१. इन विध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।
स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन।

२. याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि।।

३. सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहें।।

४. चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत।।

५. ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत।।

६. महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।।

सागर-प्रकरण-७

१६४

१. अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम।।

२. अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात।।

३. इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।।

४. खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।।

५. तुम लिख्या फुरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब।।

६. कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर।।

सागर-प्रकरण-८

१६५

१. फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत।।

२. बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर।
एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर।।

३. सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन।।

४. कंलगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर।
बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर।।

५. चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन।
ए लिए हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन।।

६. जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।।

सागर-प्रकरण-१०

१६६

१. सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन।।

२. सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार।।

३. रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन।।

४. देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत।।

५. गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत।।

सागर-प्रकरण-१०

१६७

१. बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूखन।
बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन।।

२. बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन।
बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन।।

३. बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत।
कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत।।

४. बल बल जाउं चरन के, बल बल हस्त कमल।
बल बल नख सिख सब अंगों,बल बल जाऊं पल पल।।

५. बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत।
महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत।।

सागर-प्रकरण-११

१६८

१. पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन।।

२. इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन।।

३. तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए।।

४. अन्तस्करन आतम के, जब ए रह्यो समाए।
तब आतम परआतम के, रहे न कछू अन्तराए।।

५. ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल।।

सागर-प्रकरण-११

१९९

१. पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर।
प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर।।

२. इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर।।

३. नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत।
अपने अंग रूहें जान के, नेह नए नए उपजावत।।

४. इस्क प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर।
फूल पोहोंचे तालू रूह के, कायम चढ़ाव होत जोर।।

५. ए इस्क सागर अपार है, वार न पाइए पार।
ए लेहेरी इस्क सागर की, हक देवें सोहागिन नार।।

६. मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत।।

सागर-प्रकरण-१२

२००

१. जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूं पी सराब।
ए कायम मस्ती अर्स की, जो साकी पिलावे आब।।

२. जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक।
तो फुरसत न पाओ दम की, सुख इस्क गिनती हक।।

३. ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह।
तो कई देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह।।

४. ए नजर तुमें तब खुले, जो पूरन करें हक मेहेर।
तो एक हक के इस्क बिना, और देखो सब जेहेर।।

५. हकें मेहेर बिध बिध करी, पर किन किन खोली न नजर।
सो भी वास्ते इस्क के, करसी बातें हाँसी कर।।

सागर-प्रकरण-१२

२०१

१. सुख केते कहूं स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब।
ए सुख सोई जानहीं, जो पिए इन साकी सराब।।
२. रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान।
ए सुख कह्यो न जावहीं, जो सुख देत जुबांन।।
३. कई सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार।
ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार।।
४. कई सुख अंग सरूप के, कई सुख रंग रसाल।
कई सुख मीठी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल।।
५. ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक।
पेहेले चार देखें सागर, कोई ना हक दिल माफक।।

सागर-प्रकरण-१२

२०२

१. बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब।
निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब।।
२. जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर।।
३. बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर।
अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर।।
४. ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम।
मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम।।
५. मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम।
मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम।।

सागर-प्रकरण-१५

२०३

१. बरनन करो रे रूहजी, हकें तुम सिर दिया भार।
अर्स किया अपने दिल को, मांहें बैठाओ कर सिनगार।।
२. रूह चाहे बरनन करूं, अखंड सरूप की इत।
सपने में सत सरूप की, किन कही न हक सूरत।
३. सोई मोमिन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक।
एक अर्स के साहेब बिना, और सब करे तरक।।
४. पीठ देवे दुनी को, सो मोमिन मुतलक।
देखो कौल सबन के, सब बोले बुध माफक।।
५. सरभर एक मोमिन के, कई कोट मिलो खलक।
जाको मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक।।
६. दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था मंहमद के सिर पर।।

सिनगार-प्रकरण-१

२०४

१. आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।।

२. ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल मांहें।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, आई न्यामत हक हैं जांहें।।

३. ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक।।

४. मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन।
जड़ में सिर ले ढूंढ़ती, हक आए दिल बीच चेतन।।

५. कहे हुकमें महामत मोमिनों, हकें पोहोंचाई इन मजल।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल।।

सिनगार-प्रकरण-३

२०५

१. ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।।

२. नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक।।

३. आतम तो फरामोस में, भई आड़ी नींद हुकम।
सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम।।

४. इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक।।

५. जो हक करें मेहरबानगी, तो इन बिध होए हुकम।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम।।

६. महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए।।

सिनगार-प्रकरण-४

२०६

१. सखी री तेज भरचो आकास लों, नख जोत निकसी चीर।
ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेर निरमल का नीर।।

२. प्यारे पांउं मेरे पिउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों।
सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अर्स कह्या मेरे दिल को।।

३. झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख।
सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां केहे न सके इन मुख।।

४. अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास।।

५. महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए।।
पाउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए।।

सिनगार-प्रकरण-५

२०७

१. कई गुन हक कदम में, सब गुन खैंचें रूह को।
मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिनसों।।

२. हक कदम अर्स दिल में, सो दिल मोमिन हुआ जल।
अरवा मोमिन जीव जल के, सो रूह जल बिन रहे न पल।।

३. ए बेली फूल रूह मोमिन, सो बेल भई हक चरन।
बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमिन।।

४. ए कदम ताले मोमिन के, सो मोमिन हक चरन।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो रूहें असल अर्स में तन।।

५. सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल।
अरस-परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल।।

सिनगार-प्रकरण-६

२०८

१. फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।।

२. गुन केते कहूं इन चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।।

३. बरनन करत हों चरन की, अर्स सूरत हक जात।
ए नेक कहूं हक हुकमें, सोभा सब्द न इत समात।।

४. कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल।
रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल।।

५. कही सुछम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक।
रस रंग सोभा सलूकी, देख अर्स सहूरें हक।।

सिनगार-प्रकरण-६

२०९

१. अति मीठे रसीले रंग भरे, जाको ए चरन मेहेर करत।
सुख सोई जाने रूह अर्स की, जिन दिल दोऊ पांउं धरत।।
२. सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत।
ए अमल क्यों उतरे, जाको हक बका सुख देत।।
३. ए सुख कायम हक के, जिन दिल एह कदम।
सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत है खसम।।
४. कई विध के सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, इन पर कहा कहे सुभान।।
५. कदम मेहेबूब के मोमिन, क्यों सहें जुदागी खिन।
तो हकें कह्या अर्स दिल को, कर बैठे अपना वतन।।

सिनगार-प्रकरण-६

२१०

१. ए क्यों छोड़े चरन मोमिन, जो हक की वाहेदत।
आए दुनी में जाहेर करी, जो असल हक निसबत।।
२. रूहें उतरीं नूर बिलंद से, कदम नासूत में भूलत।
तिन पर रसूल होए आइया, जो असल हक निसबत।।
३. रूहें अर्स की कदम भूलियाँ, तिन पर रूह अपनी भेजत।
अर्स बातें केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत।।
४. ले चरन दिल अर्स में, सब गलियों में फिरत।
सब सुध होवे अर्स की, जो असल हक निसबत।।
५. तिन भाग की मैं क्या कहूं, ए जिन दिल कदम बसत।
धंन धंन कदम धंन ए दिल, जो असल हक निसबत।।

सिनगार-प्रकरण-७

२११

१. अर्स अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
२. रूहें बारे हजार बैठाए के, हक हाँसी को खेलावत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
३. रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।
४. नूर मकान सें आवें दीदार को, इत नूरजमाल बिराजत।
रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
५. आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत।
जो सुपने कदम न भूलिए, हँसिए हकसों ले निसबत।।
६. लाहा लीजे दोनों ठौरका, सुनो मोमिनों कहे महामत।
क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत।।

सिनगार-प्रकरण-८

२१२

१. दिल हक का और हादी का, ए दोऊ दिल हैं हक।
एकै मता दोऊ दिलमें, ए अर्स रूहें जानें विवेक।।

२. जो गंज हक के दिलमें, सो पूरन इस्क सागर।
कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमिन कोई न कादर।।

३. तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो इन दिलमें हक बैठक।
तो इत जुदागी कहां रही, जहां हकै आए मुतलक।।

४. ए क्यों होए बिना निसबतें, इतहीं हुई वाहेदत।
निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत।।

५. छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान।
जो नेक देखूं गुन अन्दर, तो तबहीं निकसे प्रान।।

सिनगार-प्रकरण-११

२१३

१. रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तोको हकें कही अर्स की।
अर्स किया तेरे दिल को, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई।।

२. जो कदी तैं आई नहीं, तोमें हक का है हुकम।
हुज्जत दई तोको अर्सकी, दिया बेसक अपना इलम।।

३. बिन जामें देखों अंगको, आसिक सब सुख चाहे।
बागा पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए।।

४. आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक।
निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा विसेक।।

५. खाना पीना खिन खिन लिया, प्यार अर्स रूहन।
पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन।।

सिनगार-प्रकरण-११

२१४

१. मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल।।

२. जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम।
आठों पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम।।

३. ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार।
देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार।।

४. बल बल जांउं मुख हक के, सोभा अति सुन्दर।
ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर।।

५. रूह के नैना खोल के, देखूं दोऊ गाल।
आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल।।

६. महामत हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक।
और भी कहूं हक हुकमें, अब होसी सब विवेक।।

सिनगार-प्रकरण-१२

२१५

१. देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल।
अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल।।

२. गुन नैनों के क्यों कहूं, रस भरे रंगीले।
मीठे लगे मरोरते, अति सुन्दर अलबेले।।

३. नैनों की गति क्यों कहूं, गुनवंते गंभीर।
चंचल चपल ऐसे लगे, सालत सकल सरीर।।

४. दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार।
सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार।।

५. केहेर कह्या तीर त्रगुड़ा, रही सीने बीच भाल।
रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल।।

६. कहे गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए।।

सिनगार-प्रकरण-१४

२१६

१. नूर भरे नैना निरमल, प्रेम भरे प्यारे।
रस उपजावत रंगसों, मानों अति कामन-गारे।।
२. दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार।
सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार।।
३. मेरी रूह नैनकी पुतली, तिन नैन पुतली के नैन।
मासूक राखूं तिन बीचमें, तो पाऊं अर्स सुख चैन।।
४. प्रेम प्रीत रस इस्क, सब नैनों में देखाई देत।
ए रस जानें रूहें अर्सकी, जो भर भर प्याले लेत।।
५. देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक।
नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इस्क।।

सिनगार-प्रकरण-१४

२१७

१. भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए।
सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए।।
२. अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब।।
३. जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाह्या सब होए।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए।।
४. जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत।।
५. इन जिमी आसिक क्यों रहे, बिना किए अपनों आहार।
खाना पीना एही आसिकों, अर्स रूहों एही आधार।।

सिनगार-प्रकरण-१८

२१८

१. सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जाएं।
होए रूह जाग्रत अर्स की, ताए हुकम देवे बताए।।

२. जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सबे उलसत।
करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत।।

३. नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख।
और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दे सब सुख।।

४. सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन।
ए बारीक बातें अर्स की, कोई जाने जाग्रत मोमिन।।

५. कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख।
निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख।।

६. जब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात।
तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात।।

सिनगार-प्रकरण-१६

२१६

१. बरनन करो रे रूह जी, मासूक मुख सुन्दर।
कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर।।

२. ललित लाल मुख सागर, कहूं अचरज के अदभूत।
क्यों कर आवे बानीय में, ए बका सूरत लाहूत।।

३. कहूं सज्जनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार।
जो जो देखूं नजर भर, सो सब सागर अपार।।

४. बन्ध बन्ध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग।
गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग।।

५. केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए।
ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहे रूह बिलखाए।।

६. कहे महामत हुकमें देखाइया, ऐसी कर हिकमत।
हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत।।

सिनगार-प्रकरण-२०

२२०

१. क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन।।

२. बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखत हीं उड़े तन।।

३. हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम अलमस्त।।

४. आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत।
जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत।।

५. जो हक देखे टिक्या रहे, सोई अर्स के तन।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन।।

६. महामत कहे मोमिनों पर, करी हाँसी हुकमें।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक सें।।

सिगनार-प्रकरण-२२

२२१

१. अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत।।

२. तुम हीं उतर आए अर्स से, इत तुम हीं कियो मिलाप।
तुम हीं दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप।।

३. हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल।।

४. मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक।।

५. मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, खोली हक हकीकत मारफत।।

६. कहे महामत अर्स अरवाहें, किया पेहेलें बेवरा फुरमान।
जिन हुई हक हिदायत, सोई बातून करे बयान।।

सिनगार-प्रकरण-२३

२२२

१. हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें।।
२. खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत।।
३. हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात।
एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात।।
४. जेती रूहें आसिक, रेहेत हक खूबी के मांहें।
रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके क्यांहे।।
५. एही हक इलम को लछन, आसिकों एही लछन।
एही इलम इस्क के आरिफ, सोई अर्स रूह मोमिन।।

सिनगार-प्रकरण-२०

२२३

१. जैसी सरूप की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक।
चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक।।
२. आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे।।
३. दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम।।
४. रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग।
पिएं प्याले फेर फेर, माहों माहें करें प्रेम जंग।।
५. ए बारीक बातें अर्स की, बिन मोमिन न जाने कोए।
मोमिन भी सो जानहीं, जाको आई फजर खुसबोए।।

सिनगार-प्रकरण-२१

२२४

१. ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां पूरन।
हम सुख लिए अर्स के, दुनी में आए बिन।।
२. ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल।
ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल।।
३. अर्स भोम की एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें।
तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबांए।।
४. नैन एक रूह के, जो सुख लेवें परवरदिगार।
तिन सुख से सुख पोहोंचहीं, दिल रूहों बारे हजार।।
५. एक रूह बात करे हक सों, सुख लेवे रस रसनाएं।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के माहें।।

सिनगार-प्रकरण-२१

२२५

१. हक को काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत।
ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, तो मांग्या क्यों न पावत।।
२. सुख उपजें कई विध के, आगूं अर्स में बड़ा विस्तार।
सो रूहें सब इत देखहीं, जो कर देखें नीके विचार।।
३. सो बिगर कहे सुख देत हैं, ए तो रूहों मांग्या मिल कर।
इन जिमी बैठाए सुख अर्स के, हक देत हैं उपरा ऊपर।।
४. दुनी में बैठाए न्यारे दुनी से, किए ऐसी जुगत बनाए।
सुख दिए दोऊ ठौर के, अर्स दुनी बीच बैठाए।।
५. एकै नजर मोमिन की, हक सुख दिया चाहें दोए।
रूहें अर्स सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अर्स में होए।।

सिनगार-प्रकरण-२४

२२६

१. बैठे मासूक जाहेर, पर दिल ना लगे इत।
मासूक मुख देखन को, हाए हाए नैना भी ना तरसत।।
२. सुनने कान ना दौड़त, मासूक मुख की बात।
इस्क न जानों कहां गया, जो था मासूक सों दिन रात।।
३. रूह अंग ना दौड़े मिलन को, ऐसा अर्स खावंद मासूक।
मेहेबूब जुदागी जान के, अंग होत नहीं टूक टूक।।
४. जो याद आवे ए कदम की, तो तबहीं जावे उड़ देह।
कोई बन्ध पड़या फरेब का, आवे जरा न याद सनेह।।
५. जो दिल से ए सहूर करें, तो क्यों रहें मिले बिगर।
अर्स बेसकी सुन के, अजूं क्यों रहें नींद पकर।।

सिनगार-प्रकरण-२५

२२७

१. जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें।
जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसें।।
२. ए मोमिनों की सरीयत, छोड़ें ना हकको दम।
अर्स वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम।।
३. इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात ज्यारत।
साथ हकी सूरत के, मोमिनों सब न्यामत।।
४. मोमिन हक बिना न देखें, एही मोमिनों ताम।
बन्दगी तवाफ सब इतहीं, मोमिनों इतहीं आराम।।
५. खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर।
इतहीं पूरन दोस्ती, इत बरसत हक का नूर।।
६. सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अन्दर।
पूरन सरूप दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर।।

सिनगार-प्रकरण-२५

२२८

१. रूहों मैं-रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुमें चाहों।
वास्ते तुमारे कई विध के, इस्क अंग उपजाओं।।

२. मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल।।

३. अव्वल दोस्ती हक की, लिखी माहें फुरमान।
पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी न पेहेचान।।

५. मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद।
तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।।

६. मैं तेहेत-कबाए तुमको रखे, कोई जाने ना मुझ बिन।
तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अर्स दिन।।

७. स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत।।
स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास तुमारी निसबत।।

८. देखो अचरज महामत मोमिनों, जो बेसक हुए हो तुम।
तुमें किन दई एती बुजरकी, दिल अर्स कर बैठे खसम।।

सिनगार-प्रकरण-२६

२२६

१. रे पिरीयम, हथ तोहिजडे हाल।
आए डी वेरां उथणजी, हांणे पसां नूरजमाल।।

२. हिन अर्सजे बाग में, आयूं मुद्यूं मींह।
हिन वेरां असां के, जुद्यूं रख्यूं कींह।।

३. अग्यां अर्स बाग में, करे कोइलडी टहुंकार।
ढ़ेली मोर कणकियां, जमुना जोए किनार।।

४. मथेनी वसे मींहडो, वानर मोर कुडन।
कई नी जातूं जानवर, कई जातूं पसुअन।।

५. वाओ अचे बागन में, डालरियूं उलरन।
रूहें रांद करींदियूं, मथें चढ़यूं लुडन।।

६. जानवर जे हिन बाग जा, डारी डारी त्रपन।
मिठडी चूंजे मीठी वाणियां, हे रांदिका रूहन।।

७. महामत चोए मेहेबूबजी, तो पसाएं पसन।
अंखियूं नी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन।।

सिंधी-प्रकरण-२

२३०

१. तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर।।

२. अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें।।

३. रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर।।

४. रूहअल्ला अर्स अजीम से, नूर आला ले आए।
सो ए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए।।

५. आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात।
सो अटके वजूद में, पकड़े पुल-सरात।।

६. महामत कहे ए मोमिनों, तुमें करी हिदायत हक।
और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक।।

मारफत सागर-प्रकरण-२

२३१

१. खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग।
अर्स के जानवरों को, कायम है सोहाग।।

२. सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल।।

३. जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन।
याही अंग इस्क में, छोड़त नाहीं खिन।।

४. खावंद के दीदार को, पसु और जानवर।
आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर।।

५. किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए।
दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए।।

६. धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर।।

७. एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहें।
खेलें बोलें गाएं लरें, सो सब इस्क माहें।।

परिक्रमा-प्रकरण-२८

२३२

१. बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम।
नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम।।

२. खोल आंखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेर बेर।
क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर।।

३. सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाहें।
नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माहें।।

४. नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर।
इस्क अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर।।

५. नूर कहे महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम।
वाहेदत आप नूर होए के, पकड़ो नूरजमाल कदम।।

परिक्रमा-प्रकरण-३५